हम चाकर रघुनाथ के

हम चाकर रघुनाथ के

विमल मित्र

सुप्रसिद्ध देशसेवक, साहित्यसेवी, शिक्षाविद्
और हिन्दी के सशक्त प्रहरी
श्री सुधाकर पाण्डेय (संसद सदस्य)
को सादर समर्पित—



बचपन में आदमी जो सपने देखता है, बड़े होने पर क्या वे सब हमेशा पूरे होते ही हैं ? एक क्लास में एक साथ कितने ही लड़के पढ़ते हैं। कितने ही लड़के फर्स्ट आते हैं और कितने ही फेल होकर एक ही क्लास में पड़े रह जाते हैं !

उसके बाद आदमियों की भीड़ में एक दिन कौन कहां खो जाता है, उसका फिर अता-पता भी नहीं मिल पाता। जिन्दगी-भर हो सकता है कि उन घनिष्ठ मित्रों के साथ फिर कभी भेंट-मुलाकात ही न हो !

हम लोगों के साथ पढ़ा करता था राजू। राजू के ऊपर मुझे बड़ी दया आती। सिर्फ मुझे ही नहीं, क्लास के सभी लड़कों को राजू के प्रति बड़ी दया आती। विधवा मां का इकलौता बेटा था राजू। और फिर राजू था भी एक ऐसा लड़का, जो कि अपनी मां को पागलपन की हद तक प्यार करता था।

हम लोग बहुधा फुटबॉल खेलने के बाद गप्पें लड़ाने के लिए बैठ जाते। गप्पें लड़ाते-लड़ाते कभी रात के सात बजते तो कभी आठ। उसके बाद घर आने पर हम लोग मां-बाबू जी की डांट खाते। दरअसल हम लोगों का लीडर था नन्दू।

नन्दू हम लोगों को कभी चिनियाबादाम खिलाता तो कभी घुघनी।

कभी-कभी आलूचाप और बैंगनी भी···। इसीलिए नन्दू को हम लोगों ने अपना लीडर मान लिया था। नन्दू जो कुछ भी कहता, हम लोग उसकी बातों पर अमल करते।

नन्दू फुटबॉल के खेल में सेण्टर-फार्वर्ड से खेला करता। उसका खेल देखने लायक होता था। उसके पैर के पास अगर फुटबॉल आ गया तो फिर चाहे जैसे भी हो, वह गोल होगा ही।

और राजू ?

वह था गोलकीपर। उसमें दौड़ने की हिम्मत ही नहीं थी। एक जगह खड़े रहने पर भी वह मानो बुरी तरह थक जाता। एक बार बचपन में उसे टायफायड हुआ था, उसके बाद से ही वह बड़ा कमजोर हो गया था। बाज़ार की बनी हुई कोई भी चीज़ वह अपने मुंह में नहीं रखता था।

हम लोग जब फुटबॉल के खेल के खत्म होने पर मैदान में गोल घेरा बनाकर बैठते तो बहुधा हम राजू को भी बुलाया करते।

मैं कहता, "राजू, आओ न ! आज नन्दू हम लोगों को घुघनी और पुचके खिलाएगा।"

राजू झट-पट घर लौट जाता।

कहता, "नहीं भाई, इन सब चीज़ों को खाने के लिए डाक्टर ने मना कर रखा है।"

नन्दू कहता, "अरे, डाक्टर लोग तो वैसे ही बोला करते हैं। उनके कहने से कोई घुघनी खाना छोड़ देगा क्या ?"

राजू कहता, "वे सब चीज़ें खराब तेल से बनी हुई होती हैं। उन चीज़ों को खाने से मैं बीमार हो जाऊंगा।"

हम कहते, "तो फिर सिर्फ बैठे-बैठे हम लोगों के साथ बातचीत करो। इतनी जल्दी घर लौटकर आखिर करोगे क्या ?"

राजू कहता, "नहीं भाई···। मां नाराज़ होगी।"

हम कहते, "तू अपनी मां से इतना डरता है ?"

राजू कहता, "मां के सिवाय तो मेरा और कोई भी नहीं है। उसकी बात तो मुझे माननी ही होगी।"

हम सब ठहाका लगाते। कहते, "तू क्या बिलकुल छोटा-सा मुन्ना है कि मां के डर से अड्डा जमाना बिलकुल बन्द कर देगा ?"

राजू कहता, "तुम लोग मेरी मा को नहीं जानते। घर से बाहर अधिक देर तक रहने पर मां बहुत चिन्ता करने लगती है। मेरी मा ने कहा है कि ज्यादा अड्डेबाज़ी करना ठीक नहीं। अड्डेबाज़ी करने से आदमी का स्वभाव और चरित्र नष्ट हो जाता है।"

हम लोग राजू की बातें सुनकर ठहाका मारकर हंस पड़ते।

राजू हम लोगों के हंसी-ठट्ठे का बुरा नहीं मानता। वह ज्योंही मैदान से घर की तरफ पांव बढ़ाता, त्योंही नन्दू दौड़कर उसकी धोती की लांग खोल देता।

हम लोग राजू की हालत देखकर हंसी के मारे लोट-पोट हो जाते। हम लोग देखते कि इस तरह बेइज्जती होने पर राजू रोने लगता। उसकी आंखों से टप-टप आंसुओं की बूंदें टपकने लगतीं।

लेकिन राजू की इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह किसी को कोई कड़ी बात कह पाता। लज्जा, अपमान और आघात पाने पर भी वह न तो विद्रोह करता और न ही दूसरे लड़कों की तरह झगड़ता। माथा झुकाए वह अपनी धोती की लांग ठीक करता और फिर अपने घर की तरफ बढ़ जाता।

पढ़ने में राजू कच्चा नहीं था। जो भी होम-टास्क मिलता, उसे वह नियमपूर्वक घर से पूरा करके लाता। हम लोग, जो कि हमेशा फांकी दिया करते थे, उससे पूछते, "इतने सारे हिसाब तूने बनाए कैसे ?"

राजू जवाब देता, "रात-भर जाग-जाग कर। कल मैं सारी रात

हिसाब बनाता रहा !"

"तुझे तकलीफ नहीं हुई ?"

राजू कहता, "नहीं तो···। तकलीफ क्यों होती ?"

हम लोग कहते, "हमारी तो शाम होते ही पलकें झपकने लगती हैं।"

राजू कहता, "मेरी मां ने कहा है कि जो मन लगाकर पढ़ता है, बड़ा होने पर वह बहुत तरक्की करता है। उसने यह भी कहा है कि मास्टर साहब की बात हमेशा मानना। मास्टर साहब गुरुजन होते हैं। गुरुजनों की बात माननी चाहिए। ऐसा करने पर भगवान भी उसपर कृपा करता है।"

नन्दू कहता, "दुर्···, भगवान कभी भी गरीब लोगों पर नज़र नहीं रखता। वह तो कृपा करता है सिर्फ बड़े लोगों पर।"

राजू कहता, "नहीं, कभी नहीं। मां ने कहा है कि भगवान सब को एक ही नज़र से देखता है।"

नन्दू बोलता, "तेरी मां कुछ भी नहीं जानती।"

राजू कहता, "मेरी मां कुछ नहीं जानती और तुम्हीं लोग सब कुछ जानते हो न ? मेरी मां रामायण पढ़ती है, महाभारत पढ़ती है। मेरी मां ही तो मुझे बंगला पढ़ाती है।"

"लेकिन गणित ?"

राजू कहता, "गणित मैं अपने पड़ोस के राजेन मामा के पास सीख आता हूं।"

"राजेन मामा तेरे क्या लगते हैं ?"

राजू के राजेन मामा एक वृद्ध सज्जन थे। राजू के घर के पास ही उनका मकान था। उनका पूरा नाम था राजेन्द्रनाथ सरकार। पेशे से वकील थे वह।

राजू की मां ने एक दिन जाकर उन्हें पकड़ा। राजू भी साथ ही था।

राजेन बाबू ने राजू की मा को देखकर पूछा, "क्यों राजू की मां, कहो, क्या हाल-चाल है ?"

राजू की मां ने कहा, "भैया, मैं अपने लड़के के बारे में बात करने के लिए आई हूं।"

"बोलो, क्या बात है ?"

राजू की मां ने कहा, "क्या आप मेहरबानी करके मेरे लड़के को थोड़ा गणित सिखा देंगे ? उसके लिए मैं आपको रुपये तो नहीं दे पाऊंगी, पर आपके लिए मेहनत-मजूरी जरूर कर दूंगी।"

"मेहनत-मजूरी कर दोगी, इसका क्या मतलब ?"

राजू की मा बोली, "जरूरत होने पर मुढ़ी तैयार कर दूगी, कपड़े धो दिया करूंगी और यदि आप कहेंगे तो बर्तन भी माज दूगी। आप जो-जो काम बताएंगे, वे सभी काम कर दूंगी।"

राजेन बाबू की अवस्था खराब नहीं थी। न ही उनके घर पर काम करने वाले आदमियों की कमी थी। उन्होंने कहा, "नहीं-नहीं, तुम्हें वे सब काम नहीं करने पड़ेंगे। मैं तुम्हारे लड़के को गणित पढा दिया करूंगा। मैं उसे अंग्रेजी भी सिखा दिया करूंगा।"

उसके बाद राजू की तरफ देखते हुए उन्होंने कहा, "तुम बीच-बीच मे आ जाया करो, समझे न ? शर्म-संकोच की कोई बात नहीं है। अपने लड़कों को भी तो मैंने ही कभी पढाया था।"

राजू की मा ने राजेन बाबू के पैर छुए और कहा, "भइया, मेरा और कोई भी नहीं है। इसे अकेला छोड़कर वे तो चले गए। एक बार भी उन्होंने सोचा तक नहीं कि मैं इसे किस तरह बड़ा करूगी। आखिर दो आदमियों का पेट कैसे भरेगा ! इतने दिनों तक दूसरों के घर पर काम-

काज करके मैंने दिन गुज़ारे हैं। अब यह ऊंची क्लास में चला गया है। इस समय अगर एक मास्टर रख पाती, तो अच्छा होता। लेकिन जो कुछ मैं कमा पाती हूं, उससे किस तरह मैं दो प्राणियों का पेट भरूं और भला मास्टर ही किस तरह रखूं ?"

राजेन बाबू ने कहा, "तुम्हारे जेठ जी तो हैं। वे लोग तुम लोगों की देखभाल क्यों नहीं करते ?"

राजू की मां बोली, "उनकी बात छोड़ दीजिए, भइया। वे सब देखभाल तो क्या करेंगे, बल्कि उल्टा काम करते हैं। मेरे राजू को तो छात्रवृत्ति भी मिलती है और वह परीक्षा में अच्छी तरह पास हो जाता है। लेकिन मेरे जेठ जी का लड़का हमेशा फेल होता है। इसीलिए वे हमसे इतना जलते हैं। और फिर भइया, वे जो कुछ छोड़ गए हैं, वही यदि हमें ठीक से मिलता तो फिर चिन्ता-फिक्र की बात ही क्या थी ?"

बात बिलकुल सच थी। राजू के ताऊ जी थे। राजू के पिताजी के मरने के पहले घर में दोनों परिवारों का खाना एक ही चूल्हे पर बनता था। उस समय उनका परिवार संयुक्त परिवार था। लेकिन जैसे ही राजू के पिताजी की मौत हुई, सब-कुछ उलट-पलट हो गया।

राजू के ताऊजी ने आकर राजू की मां से कहा, "बहू, जो होना था सो तो हो गया। अब बताओ, तुम क्या करोगी ?"

राजू की मां ने जवाब दिया, "अब तो आपका ही सहारा है। आप जैसा कहेंगे, वैसा ही होगा।"

राजू के ताऊ जी बोले, "मैं कह रहा था कि हम दोनों भाइयों की जो सम्पत्ति है, उसका बंटवारा हो जाए। झूठ-मूठ दोनों परिवारों के एक साथ रहने से क्या फायदा ?"

राजू की मां ने कहा, "आप जो कुछ ठीक समझें, वही करें। मैं

ठहरी एक विधवा औरत। मैं भला क्या जानूं और क्या समझूं इन सब बातों को ?"

राजू उस समय बहुत छोटा था। विधवा मां को ही सारे घर का खाना पकाना पड़ता था। राजू की ताई जी मौका मिलते ही राजू की मां को खरी-खोटी सुनाने लगतीं। इतनी बेइज्जती होने पर भी मां के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकलता था।

मा की बातें सोच-सोचकर उस छोटी-सी उम्र में भी राजू को बेहद तकलीफ होती।

राजू रात में अपनी मां के पास ही सोता।

राजू कहता, "मा, ताई जी तुम्हें इतनी बातें सुनाती हैं। लेकिन तुम कुछ भी बोलती क्यों नहीं ?"

राजू की मा जवाब देती, "वे कहती हैं तो कहें। उनकी बातों से मेरे बदन पर फफोले तो पड़ते नहीं। तेरी ताई जी हम लोगों के लिए बड़ी हैं। बड़े लोग अगर कोई कड़वी बात भी कहें, तो उसका बुरा नहीं मानना चाहिए।"

राजू कहता, "तो क्या इसका मतलब यह है कि वे झूठ-मूठ तुम्हें गालियां देंगी ?"

मा कहती, "देख, भगवान तो सर्वत्र विद्यमान है। वह सब कुछ देख रहा है। उसके दरबार में अन्याय नहीं होगा। एक न एक दिन न्याय मिलेगा ही। उस दिन के इन्तजार में ही तो मैं जिन्दा हूं।"

राजू को अपनी मां की बातों पर बड़ा भरोसा होता। वह पूछता, "अच्छा मां, बताओ तो, क्या सचमुच भगवान सब कुछ देख रहा है ?"

मां कहती, "हां रे, भगवान इस दुनिया की सारी चीजें देख रहा है।"

राजू पूछता, "तो फिर भला मेरे पिताजी की मौत ही क्यों हुई ?

आखिर पिताजी का क्या कसूर था ?"

मां कहती, "भगवान की लीला को समझ पाना आदमी के वस की बात नहीं है। हो सकता है कि पिछले जन्म में मैंने ही कोई पाप किया हो ! इस जन्म में इसीलिए मुझे इतनी तकलीफ उठानी पड़ रही है। नहीं तो भला तुझे ही इतना कष्ट क्यों उठाना पड़ता ?"

राजू कहता, "क्या मां, मैंने भी पिछले जन्म में कोई पाप किया था ?"

राजू की मां कहती, "वे सब बातें छोड़। रात होती जा रही है, सो जाओ नहीं तो फिर कोई हमारी बातें सुन लेगा ! फिर तो हमें तुम्हारी ताई जी से खूब डांट खानी पड़ेगी।"

राजू उस समय सोने की कोशिश करता। लेकिन भला क्या नींद इतनी आसानी से आती है ! उसके बाद भी वह काफी देर तक जागता रहता। उनका घर गली के भीतर था। गाड़ियों का कोई शोरगुल वहां नहीं पहुंचता था। सारा वातावरण शान्त और निस्तब्ध रहता। कभी-कभी खिदिरपुर की तरफ से किसी जहाज का भोंपू सुनाई पड़ता। शायद गंगा से कोई जहाज छूटा हो ! या फिर कभी चिड़ियाखाना की तरफ से किसी बाघ के दहाड़ने की आवाज आती। उसके बाद कब वह नींद की दुनिया में खो जाता, इसका उसे कुछ ख्याल भी नहीं रहता।

उसके बाद जब सूरज काफी ऊपर चढ़ जाता, तब उसकी नींद टूटती। नींद टूटने पर वह देखता कि मां उसके पास नहीं होती। सुबह से ही मां घर के काम-काज में डूब जाती। पूरे घर के लोगों के जागने के पहले ही मां जाकर चूल्हा सुलगा देती। उसके बाद मां ताई जी के बिछौने के पास जाकर गर्म चाय की प्याली रख आती। उस समय से ही ताई जी की बक-झक शुरू हो जाती।

ताई जी बिगड़ कर कहतीं, "यह चाय लाई हो या चिरायते का

पानी ?"

मा झट-पट जाकर चाय की प्याली में थोड़ा-सा दूध तथा थोड़ी-सी चीनी डाल लाती।

ताई जी वह चाय पीते-पीते मुंह टेढ़ा कर कहती, "अपनी गांठ के पैसे से तो तुम्हें चीनी खरीदनी नहीं पड़ती। इसीलिए तुम एक मुट्ठी चीनी डाल कर चली गई। अपने पैसों से अगर तुम्हें चीनी खरीदनी पड़ती, तब तुम्हें पता चलता।"

इसी तरह मा के दिन की शुरुआत होती। उसके बाद उसी तरह की डांट-फटकार रात के दस बजे तक जारी रहती।

इसीलिए जब राजू के ताऊ जी ने अलग होने की बात छेड़ी, तब राजू की मा बड़ी फिक्र में पड़ गई।

राजू ने पूछा, "मा, अब हम लोगों का खर्च किस तरह चलेगा ?"

मा ने जवाब दिया, "जो भगवान को मंजूर होगा, वही होगा। मैं और कर भी क्या सकती हूं ?"

राजू के पिता जी और ताऊ जी दो भाई थे। मकान का आधा-आधा बटवारा होना उचित था। लेकिन नहीं, वैसा नहीं हुआ। ताऊ जी ने कहा, *"मैंने इस मकान के लिए बीस हजार रुपये दिये हैं। इस*-लिए मुझे हिस्से में अधिक मिलना चाहिए।"

राजू की मा ने कहा, "सो आप जैसा ठीक समझते हों, कीजिए। मैं एक विधवा औरत हूं। भला मैं इन सब बातों को क्या समझूंगी ?"

ताऊ जी ने अपने हिस्से में अधिक से अधिक ले लिया। राजू की मा को मिली सिर्फ एक कोठरी। वह कोठरी भी ऐसी थी कि जिसमें न रोशनी आती थी और न ही हवा। दिन के समय भी बत्ती जलाकर काम करना पड़ता।

राजू के ताऊ जी का लड़का विनोद पढ़ने में तेज नहीं था। उसे

होता है ? राजू का दिमाग तेज है और विनोद का जरा कमजोर या···।"

ताई जी ने कहा, "यदि आप ऐसा कहते हैं तो आपको कल से विनोद को पढाने के लिए आने की जरूरत नही। इस बार मैं दूसरा मास्टर देखूगी।"

उसी दिन मकान के बटवारे की बात उठी।

ताई जी ने कहा, "काफी दिनो से दूध पिला-पिलाकर घर में साप पाल रही थी। बस, अब और नही। मुझे काफी शिक्षा मिल चुकी है।"

राजू अपनी मा से कहता, "मां, तुम बहरी हो गई हो क्या ? ताई जी हम लोगों को गालिया दे रही है और तुम चुपचाप बैठी हो। कुछ भी जवाब नही दे रही हो। तुम अगर कुछ नहीं बोलोगी तो फिर मैं इसका जवाब दूगा...।"

मां कह उठती, "देख मुन्ने, क्या तू चाहता है कि मैं गले मे फांसी लगाकर मर जाऊं ? तो फिर जो तुम्हारे जी मे आए, वही करो।"

राजू कहता, "मां, मैं तुम्हारे पैरों पडता हूं। तुम उन लोगों की बातों का कुछ जवाब दो। नही तो मैं दूगा इसका जवाब...।"

मा शायद कुछ डर गई।

मा ने कहा, "मैं तुझे सावधान कर रही हूं मुन्ने। अगर तू कुछ बोलने गया तो फिर मुझे जिन्दा नही देख पाएगा।"

राजू ने कहा, "तो फिर मैं क्या करूं, यही बता दो मा। अपने लिए मैं कुछ भी नहीं सोचता। लेकिन वे लोग तुम्हें गालिया देंगे तो क्या मुझे यह भी बर्दाश्त करना होगा ?"

मा कहती, "बेटे, बचपन से ही सहन करना सीख। जो लोग सह पाते हैं, आखिर तक वे ही डटे रहते हैं।"

"लेकिन मैं उन लोगों का क्या नुकसान कर रहा हूं, बताओ तो ?

ोद ने ठीक से पढ़ाई नहीं की और वह फेल हो गया। क्या यह भी
ा ही कसूर है ? आज मेरी वजह से ही तुम्हारी इतनी दुर्दशा हो रही
।"

मां उसके बावजूद भी कहती, "वे सब तुझसे बड़े हैं, वे तेरे गुरुजन
हैं। गुरुजनों की बात सुननी ही पड़ती है। उनकी बातों पर कभी भी
नाराज नहीं होना चाहिए।"

□□

उसके बाद ही राजू के घर के भीतर एक दीवार खड़ी कर दी गई। राजू के हिस्से में आया सिर्फ एक कमरा और विनोद के हिस्से में आया आंगन और दो बड़े-बड़े कमरे। और वैसे देखा जाए तो राजू के पिता जी और विनोद के पिताजी दोनों सहोदर भाई थे, दोनों को समान हिस्सा मिलना ही उचित था।

राजू और उसकी मां—दोनों ही राज-मिस्त्रियों को दीवार खड़ी करते देखते रहे।

राजू ने कहा, "मां, यह कैसे हुआ ? दीवार हमारी तरफ खिसका-कर क्यों खड़ी की जा रही है ?"

राजू की मां बोली, "छोड़ भी।···तू इस बात को लेकर उन लोगों से कुछ भी नहीं कहना। हम दो प्राणी हैं, इतने में ही हमारा निर्वाह हो जाएगा।"

राजू ने कहा, "लेकिन पिताजी का तो इस मकान में आधा हिस्सा था। वह आधा हिस्सा तो हमें मिलना ही चाहिए। वह तो हमारा है। क्या ताऊजी वह भी हमें नहीं देंगे ?"

मां ने कहा, "ताऊ जी हम लोगों के गुरुजन हैं। उनकी बात में मीन-मेख निकालना ठीक नहीं। आखिरकार इसी में तुम्हारी भलाई होगी, देख लेना।"

इसमें भला क्या भलाई होगी, यह बात राजू की समझ में नहीं आई। वह चुप रहा। दीवार की चिनाई पूरी होने पर उस तरफ कुछ भी दिखाई नहीं पड़ा। रसोई घर भी ताई जी के हिस्से में आया था।

राजू ने अपनी मां से पूछा, "मां, तुम खाना कहां पकाओगी ?"

मां ने कहा, "कमरे के भीतर ही पकाऊंगी। कौन सी भारी रसोई करनी है ? दो ही तो हैं खाने वाले। इसके लिए इतनी फिक्र क्या है ?"

"लेकिन चावल-दाल, तेल-नमक और आलू—कुछ भी तो नहीं है हम लोगों के पास।"

उस दिन से मां को घर से बाहर निकलना पड़ा। जीवन में कभी भी मां घर के बाहर नहीं निकली थी। विधवा होने के बाद पहली बार मां को घर से बाहर निकलना पड़ा। कहां चावल की दुकान है, कहां दाल की दुकान है और कहां तेल-नमक और आलू मिलता है; यह कुछ भी मां को पता नहीं था।

मां के साथ राजू भी बाहर निकला। राजू ने अपनी मां से कहा, "मां मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।"

मां ने कहा, "तू मेरे साथ चलकर क्या करेगा ? उसके बजाय तो तू घर पर ही रहकर पढ़ाई-लिखाई कर। तू अगर किसी दिन बड़ा आदमी बन पाया, तो उस समय मेरे सारे दुःख-कष्ट मिटेंगे। भगवान के सामने उसी दिन मैं अपना मुंह दिखा सकूंगी। उस दिन मेरे सारे कष्ट सार्थक होंगे।"

राजू ने कहा, "नहीं, एक दिन अगर मैं नहीं पढ़ूंगा, तो कुछ नहीं

विगड़ेगा ? मैं तुम्हारे साथ चलूंगा। तुम तो अपनी जिन्दगी में कभी भी घर से वाहर निकली नहीं।"

मां ने पूछा, "सोना-चांदी की दुकान किधर है ? क्या तू वता सकता है मुझे ?"

राजू ने पूछा, "सोना-चांदी की दुकान ? वहां जाकर भला तुम क्या खरीदोगी ?"

"खरीदूंगी नहीं, वेचूंगी।"

"क्या वेचोगी ?"

मां ने कहा, "अपने सोने के गहने।"

"सोने के गहने तुम वेच दोगी ? नहीं मां, तुम्हें मैं गहने नहीं वेचने दूंगा। किसी भी हालत में नहीं...।"

मां ने कहा, "गहने नहीं वेचूंगी तो तू खाएगा क्या ? रुपये कहां से आएंगे ? तू क्या नौकरी करके तनख्वाह लाता है कि मैं उससे तेरा पेट भरूंगी ?"

यह वात सुनकर राजू की आंखों से आंसू वहने लगे। राजू ने कहा, "तो फिर मां, मैं नौकरी करूंगा।"

"कैसी नौकरी करेगा तू ? तुझे नौकरी देगा कौन ? क्या यह तेरी नौकरी करने की उम्र है ?"

राजू ने कहा, "हां मां, मैं नौकरी करूंगा।"

"कैसी नौकरी करेगा, यह भी तो वता ?"

राजू ने जवाव दिया, "क्यों, नौकरी की क्या कमी है ? कलकत्ता में कितनी ही तरह की नौकरी मिल सकती है। मैं दूसरे लोगों के घर में नौकर का काम करूंगा। तुम घर लौट चलो मां। मैं तुम्हें गहने नहीं वेचने दूंगा।"

मां परेशान हो उठी।

चलते-चलते उसने कहा, "तू जरा चुप भी तो रह। बेकार का गाल बजाना अच्छा नहीं लगता। तू तो पराये घर में नौकर का काम करेगा और मैं चुपचाप देखती रहूंगी, यही कहना चाहता है क्या ? अगर इस उम्र में तुझे दूसरे के घर में नौकर का काम करना पड़े तो फिर भला मेरे जिन्दा रहने का क्या लाभ ?"

राजू अपनी मा के पीछे-पीछे चलता रहा और बार-बार अपनी उसी रट को दुहराता रहा। आखिरकार बाजार के पास आते ही एक सोने-चांदी की दुकान दिखाई पड़ी।

मा दुकान के भीतर गई।

दुकानदार मुंह नीचा किए कोई गहना गढ़ रहा था।

पैर की आवाज़ सुनकर उसने सिर उठाया और कहा, "आइए... कहिए, क्या चाहती हैं आप ?"

मां ने कहा, "मेरे पास एक जोड़ी सोने के कर्णफूल है। उनमें से एक मैं बेचना चाहती हूं।"

"कहां है वह कर्णफूल, जरा दिखाइए तो !"

मा ने अपने आंचल की गांठ खोलकर एक कर्णफूल निकाल कर सामने रख दिया। सुनार ने उसे कसौटी-पत्थर पर रगड़कर देखा और फिर उसे वज़न किया। उसके बाद वह बोला, "इसकी कीमत अधिक नहीं मिल पाएगी। इसमें रुपये में आठ आना खोट है।"

मा ने पूछा, "फिर भी आप इसकी क्या कीमत दे सकेंगे ?"

दुकानदार ने कहा, "मैं इसके लिए आपको सिर्फ इकतीस रुपये दे सकता हूं।"

"सिर्फ इकतीस रुपये ? क्या कुछ और ज्यादा नहीं दे सकते ?

"दे सकता, अगर इसमें इतनी खोट न होती।"

मा के ये कर्णफूल न जाने कब के थे ! शायद शादी के समय के हों।

शायद पिताजी ने तैयार करवा कर दिए हों। उस समय एक जोड़ा कर्णफूल की कीमत शायद पन्द्रह रुपये ही पड़ी हो। अब सोने की कीमत बढ़ी है। इसीलिए एक कर्णफूल के बदले में इकतीस रुपये मिल रहे हैं!

मां ने कहा, "तो फिर वही दीजिए। मुझे रुपयों की सख्त जरूरत है। इसीलिए इसे बेचना पड़ रहा है।"

मां ने इकतीस रुपये लिए और उन नोटों को अच्छी तरह आंचल में बांध लिया। उसके बाद रास्ते में आकर मां ने राजू से कहा, "चल, भात पकाने के लिए मिट्टी की हांडी खरीदनी होगी।"

भात पकाने का बर्तन वगैरह कुछ भी ताई जी ने मां को नहीं दिया था। और देखा जाए तो बर्तनों में भी आधा हिस्सा राजू की मां को मिलना चाहिए था। लेकिन इसके बारे में मां ने ताई जी से कुछ भी नहीं कहा। भगवान के ऊपर भरोसा करके निश्चिन्त होकर मां ने सारी बर्बादी को सिर-माथे पर लिया।

"चलो, अब चावल खरीदना होगा।"

मां ने मिट्टी की हांडी, चावल और दाल खरीदी। उसके बाद तेल, नमक और आलू। एक-एक कर सारी चीजें वह राजू के हाथ में देती गई। बोझ काफी हो गया था।

मां ने पूछा, "इतनी चीजें ले जाने में तुझे कोई तकलीफ तो नहीं हो रही है?"

राजू ने जवाब दिया, "नहीं।"

मां ने कहा, "थोड़ी तकलीफ अगर हो रही है तो होने दे। तकलीफ पाना अच्छा है रे मुन्ने। तू जितने कष्ट झेलेगा, भगवान उतनी अधिक तेरे ऊपर दया रखेगा। वह उतना ही अधिक तुझसे स्नेह करेगा।

राजू की वैसी हालत देखकर हम लोगों को भी दया आती। रूखा-

सूखा चेहरा, शायद पेट-भर भात भी उसे मिल नहीं पाता था। मैला पैंट और मैली ही कमीज़...!"

हम लोग राजू से पूछते, "यह क्या राजू ? तेरी सूरत कैसी हो गई है ?"

राजू कहता, "ताई जी ने हमें अलग कर दिया है भाई।"

हम कहते, "तब तो तुम लोगों पर भारी मुसीबत आ गई है।"

राजू कहता, "मुसीबतें आती हैं तो आने दो। मां ने कहा है कि मैं जितने कष्ट झेलूंगा, भगवान उतनी ही अधिक दया रखेगा मेरे प्रति। भगवान मुझे उतना ही अधिक प्यार करेगा।"

"लेकिन इस तरह तुम्हारा गुज़ारा कैसे होगा ?"

राजू ने कहा, "मां के कानों में सोने के कर्णफूल थे। मां ने एक कर्णफूल बेच दिया है। मां को इकत्तीस रुपये मिले हैं उसके बदले में। उन्हीं रुपयों से मां ने हांडी, कड़ाही, चावल, दाल, तेल, नमक, आलू आदि चीज़ें खरीदी हैं। आलू भात खाकर ही आज मैं स्कूल आया हूं।"

'वे रुपये कितने दिनों तक चलेंगे ? उसके बाद क्या होगा ?"

"मां का दूसरा कर्णफूल बचा हुआ है। मां उसे भी बेच देगी।"

राजू का भगवान के ऊपर इतना विश्वास देखकर हम आपस में खूब हंसते। राजू के ऊपर हमें दया आती। बेचारे के पिताजी इतनी कम उम्र में स्वर्ग सिधार गए और उसके बावजूद भी राजू को किसी से भी कोई शिकायत नहीं थी। यह बात हमें बड़ी अद्भुत लगती।

नन्टू कहता, "तू भगवान की बातें छोड़। तेरी ताई जी ने तो तुम लोगों को इतनी बुरी तरह ठग लिया। फिर भी भला उनकी क्या हानि हुई है, ज़रा बता तो सही ! क्या तेरी ताई जी का कुछ भी बिगड़ा है ? वे तो मज़े में खाती हैं, पीती हैं और घूमती-फिरती हैं।"

उसके बाद राजू को चिढ़ाने के लिए वह फिर कहता, "आज की ही

तो बात है । मैंने बाज़ार में देखा कि तेरी ताई जी पन्द्रह रुपये किलो की मछली खरीद रही थीं । और एक दिन मैंने उन्हें चौदह रुपये किलो वाला मांस खरीदते देखा था । और तुम ? तेरी मां तुझे थोड़ी-सी झींगा-मच्छी भी खिला पाती है क्या ?"

राजू कहता, "मेरी मां तो गरीब है भाई । वह किस तरह मछली खरीद सकेगी ? और फिर मुझे मछलियों का कोई शौक भी नहीं । मैं आलू और दाल के साथ मज़े में भात खा सकता हूं ।"

नन्दू कहता, "तुम लोग गरीब हो, इसीलिए तुम्हें ऐसे ही चलाना पड़ता है । मछली अगर मिले तो भला छोड़ता कौन है ?"

राजू कहता, "मां ने कहा है कि गरीबों का भगवान होता है । जिनकी देख-भाल करने वाला कोई नहीं होता, उनकी देख-भाल खुद भगवान करता है।"

नन्दू कहता, "भगवान-भगवान की तू रट तो खूब लगा रहा है और भगवान है भी या नहीं, इसका ही कोई ठिकाना नहीं । और तू उसी भगवान के नाम की माला फेरे जा रहा है । अपने ताऊ-ताई पर तूने मामला-मुकदमा क्यों नहीं किया ? तुम लोगों के मकान का तीन-चौथाई भाग तेरी ताई जी ने हथिया लिया और तू बुद्धू की तरह सब चुपचाप मान गया ।"

राजू कहता, "इसमें हमारा क्या नुकसान है भला ? हम लोग तो हैं सिर्फ दो प्राणी । मैं और मेरी विधवा मां...। ज़्यादा जगह लेकर हम करते भी क्या ?"

"इसका मतलब क्या यह है कि तुम अपना सब हक छोड़ दोगे ? इस दुनिया में क्या कोई भी समझदार आदमी इस तरह अपना हक छोड़ता है भला ?"

राजू फिर भी हार नहीं मानता । वह कहता, "ताई जी ने हमें बाहर

रास्ते में नहीं खदेड़ा, यही क्या कम है ? अगर ताई जी हमें घर से ही निकाल देतीं तो भला हम क्या कर लेते ? हम लोग तो कोर्ट में जाकर मामला-मुकदमा कर नहीं पाते।"

"क्यों, तुम मामला-मुकदमा क्यों नहीं कर पाते ?"

राजू जवाब देता, "मां कहती है कि सिर के ऊपर भगवान तो है ! और फिर भगवान के कोर्ट से बड़ा कोर्ट भी नहीं है दुनिया में। साथ ही भगवान से बढ़कर और कोई जज भी नहीं है। इसलिए भगवान के कोर्ट में नालिश करना ही काफी है।"

नन्दू कहता, "बस, यही सब सोच-सोचकर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना। उसके सिवाय तुम करोगे भी क्या ?"

इसके बाद फिर राजू बहस नहीं करता। और उसके बाद ही मास्टर साहब क्लास में आ जाते। राजू नन्दू की चुभती हुई बातों से छुटकारा पाता।

लेकिन जिस दिन परीक्षा-फल सुनाया गया, उस दिन राजू का चेहरा देखकर हम सभी ताज्जुब में पड़ गए।

मैंने पूछा, "क्यों रे, तेरा चेहरा इस तरह मुरझाया हुआ क्यों है ? तू तो फर्स्ट आया है रे ! तूने तो गढ़ जीत लिया है राजू। फिर भी तेरे होंठों पर हंसी क्यों नहीं है रे ?"

राजू अपने घर की तरफ पांव बढ़ाने लगा।

उसने कहा, "भाई, मुझे आज घर जाने में बड़ा डर लग रहा है।"

"क्यों ?"

राजू ने कहा, "आज ताई जी चीख-चीख कर आसमान सिर पर उठा लेंगी। आज वे मेरी मां को सुना-सुनाकर खूब गालियां देंगी।

हमने पूछा, "तुम्हारी मां को वे गालियां क्यों देंगी ?"

राजू ने कहा, "बी-सेक्शन में मेरे ताऊ जी का लड़का विनोद तीन

विषयों में फेल हुआ है। उसे प्रोमोशन नहीं मिला है। अब क्या होगा ?"

"अगर विनोद फेल हुआ है तो इसमें तुम्हारा क्या कसूर है ?"

राजू कहता, "क्या मालूम ?"

यह कहकर वह अपने घर की तरफ बढ़ गया। किन्तु उसे जिस बात का डर था, वही बात हुई। बाहर रास्ते में काफी देर तक चक्कर काटने के बाद जब वह घर पहुंचा, तो उसने देखा कि घर पर कुछ गोलमाल हो रहा था। बाहर से ही उसे ताई जी के चीखने-चिल्लाने की आवाज़ सुनाई पड़ी।

ताई जी अपने घर के आंगन में खड़ी-खड़ी चिल्ला रही थीं, "जितने भी मास्टर हैं, सब के सब मुए अंधे हो गए कि मेरे लड़के को फेल कर दिया है। मैं एक-एक से बदला लेकर रहूंगी।"

ताऊ जी कह रहे थे, "तुम झूठ-मूठ मास्टरों के मत्थे दोष क्यों मढ़ रही हो ? उनका क्या कसूर है ? इस तरह से चीखने-चिल्लाने से क्या कोई फायदा होने वाला है ?"

ताई जी बोलीं, "हां-हां चिल्लाऊंगी, जरूर चिल्लाऊंगी। मैं किसी का खाती हूं कि पहनती हूं ? आप कैसे मर्द हैं जी ? आप मास्टर साहब के पास जाकर क्या कुछ कह नहीं सकते ? घर के भीतर मेरे ऊपर तो आप खूब रोब झाड़ते हैं. उनके पास जाकर नहीं कह सकते कि आपका भतीजा राजू नकल करके पास हुआ है।"

ताऊ जी ने पूछा, "राजू नकल मारकर पास हुआ है, यह तुमसे किसने कह दिया ? वह तो, सुना है कि फर्स्ट आया है।"

ताई जी ने कहा, "तो नकल करके फर्स्ट पोजीशन नहीं लाई जा सकती है क्या ? उसके सामने में तो कोई कुछ भी नहीं कहता। जितना भी गुस्सा है, सब हमारे विनोद पर ! भला हमारे विनोद ने उन मुए मास्टरों का क्या बिगाड़ा है कि वे उससे इतना जलते है ?"

पास ही शायद विनोद खड़ा-खड़ा सिसककर रो रहा था।

ताई जी ने विनोद की तरफ देखकर कहा, "क्यों रे, रो क्यों रहा है? क्या तू भी राजू की तरह किताबें देख-देखकर परीक्षा में नकल नहीं कर सकता था? तुम्हारे दिमाग मे थोड़ी-सी भी बुद्धि नहीं है क्या?"

ताऊ जी ने कहा, "क्या कह रही हो तुम? क्या राजू कभी किताबें देखकर परीक्षा मे नकल करेगा?"

ताई जी ताऊ जी पर बरस पड़ी। बेचारे ताऊ जी चुप हो गए। ताई जी ने कहा, "आप रुकिए भी। आप वादा कीजिए कि आप कल ही स्कूल जाकर इस मामले को निबटाएंगे। तभी मैं चुप हो सकूंगी।"

"मैं स्कूल जाकर इसका क्या समाधान करूंगा?"

ताई जी ने कहा, "समाधान भला और क्या करना है! आप जाकर मास्टर साहब से कहिएगा कि यह राजू की तरह नकल नहीं कर पाया, इसीलिए फेल हो गया है। विनोद को किसी भी तरह पास करना ही होगा।"

ताऊ जी बोले, "यह सब मैं कैसे कह सकूंगा, बताओ तो? तुम ठहरी औरत की जात, घर के भीतर ही रहती हो। आखिर तुम इस मामले में इतना चीख क्यों रही हो? ये सब बातें कहने पर स्कूल के मास्टर क्या सोचेंगे, बोलो तो? एक बार फेल होने पर क्या कोई उसे पास कर सकता है?"

ताई जी ने कहा, "हां-हां, जरूर कर सकता है। आपके सिवाय और सभी लोग कोशिश-पैरवी करके कोई भी काम कर सकते हैं। आपको कोशिश-पैरवी करने मे अगर इतनी शर्म आती है तो फिर आप मर्द बने ही क्यों हैं, बताइए तो? फिर तो आप औरत होकर घूंघट निकाल रसोईघर में रसोई ही क्यों नहीं करते! फिर मैं ही घर से बाहर निकलूंगी।"

ताऊ जी को गुस्सा आ गया। उन्होंने कहा, "ठीक है, तुम्हीं घर से बाहर निकलो। तुम्हीं रोज बाजार से सौदा ले आया करो और तुम्हीं कचहरी में जाकर मोहरगिरी करके रुपये भी कमाकर लाया करो। चलो, मेरी तो जान बचे। मैं रोज घर पर खाना पका दिया करूंगा। बस छुट्टी...। मुझे तो फिर आराम ही आराम है।"

ताई जी ने कहा, "देखिए, दिल्लगी करने की जरूरत नहीं। और तो आपकी कोई मुराद नहीं है, बस ठट्ठा करना सीखा है आपने। लड़का फेल हो गया है, इस बात का आपको थोड़ा-सा भी अफसोस नहीं। कैसे बाप हैं आप? मेरी किस्मत फूट गई थी, इसीलिए तो मैं आप-जैसे आदमी के पल्ले पड़ी हूं।"

राजू और खड़ा नहीं रह सका। दरवाज़े पर उसने धीरे-से दस्तक दी और पुकारा, "मां, ओ मां...।"

एक बार पुकारते ही मां ने दरवाजा खोल दिया। मां शायद अपने बेटे का इन्तजार ही कर रही थी।

मां ने दबी ज़ुबान में पूछा, "क्यों रे, स्कूल से लौटने में इतनी देर क्यों हो गई मुन्ने? मैं तो मारे फिक्र के मरी जा रही थी।"

राजू ने इस बात का जवाब दिए बिना कहा, "मां, चिल्लाओ नहीं। विनोद फेल हो गया है।"

"और तू?"

"बताता हूं...। जरा धीमे बात करो। मैं फर्स्ट आया हूं। मैंने सबसे ज़्यादा नम्बर पाए हैं।"

मां कांप उठी। उसने कहा, "बेटे, तूने यह क्या सर्वनाश कर दिया! अब क्या होगा?"

राजू ने कहा, "मैं क्या करता मां? क्या मैं जान-बूझ कर फर्स्ट आया हूं? अगर मास्टर साहब ने मुझे फर्स्ट कर दिया है तो मैं कर भी

क्या सकता हूं ?"

"तो क्या तू मास्टर साहब से कह-सुनकर विनोद को पास नहीं करवा सकता ?"

राजू ने कहा, "मैं विनोद को कैसे पास करवा सकता हूं, बोलो तो ? क्या मेरे कहने पर कोई उसे पास कर देगा ? क्या मुझमें इतनी क्षमता है ?"

मा ने कहा, "तो तू परीक्षा में अपने परचे जरा खराब भी तो कर सकता था ! तो फिर मुझे इतनी गालियां तो नहीं सुननी पड़ती। अब देख तो, कैसा सत्यानाश हुआ है। मैं अब क्या करूं, बता तो ?"

राजू ने कहा, "भला मैंने ही ऐसा कौन-सा अन्याय कर दिया है मां, बताओ तो ?"

क्रोध, दुःख और अपमान से मां एकबारगी रो पड़ी। उसने कहा, "तो तू फेल नहीं हो सकता था क्या ? कम से कम मैं मुंह दिखाने लायक तो रहती। अब क्या होगा, बता तो ? यह गाली-गलौज तो एक दिन में बन्द होगी नहीं।"

सचमुच उन गालियों का दौर एक दिन में रुका नहीं। दीवार के उस पार से गालियों की बौछार जारी रही और दीवार के इस पार कोई कान बन्द करके तो बैठा नहीं रह सकता।

राजू ने कहा, "मां, तुम क्या उनकी गालियों का जवाब नहीं दे सकती ?"

मां ने कहा, "ऐसी बातें नहीं करते बेटे। वे हमारे गुरुजन हैं। क्या कहीं गुरुजनों की बातों का जवाब दिया जाता है ?"

"लेकिन हम लोग और कब तक सहते रहेंगे ? हम लोगों ने तो उन के प्रति कोई अन्याय नहीं किया है।"

मां बोली, "इसका जवाब भगवान देगा। भगवान तो सिर के ऊपर

है ही। वह तो सब कुछ देख रहा है। वही एक दिन इसका जवाब देगा।"

राजू ने पूछा, "मां, तुम्हारा भगवान सचमुच है भी क्या? अगर भगवान होता, तो क्या वह इन सब झमेलों का अब तक कोई अन्त नहीं करता?"

मां ने कहा, "हम लोगों के नियम के साथ भगवान के नियम का कोई मेल नहीं है रे। भगवान के कानून-कायदे कुछ अलग ही हैं। चित्र-गुप्त की वही में सारा हिसाब लिखा जा रहा है। वहां भूल-चूक होने की कोई गुंजाइश है ही नहीं।"

राजू ने पूछा, "अगर यह बात है तो फिर मेरे पिताजी की मौत क्यों हुई? आखिर पिताजी का कसूर क्या था? तुम्हारे चित्रगुप्त की वही में अगर भूल-चूक नहीं होती, तो फिर हमें क्यों इतनी गालियां और बेइज्जती सहनी पड़ रही हैं?"

मां ने कहा, "बेटे तर्क नहीं किया करते। भगवान के बारे में तर्क करना ठीक नहीं। तुम्हें तो मैं बार-बार समझाती हूं कि भगवान पर कभी भी अविश्वास नहीं करना चाहिए।

राजू ने कहा, "यह बात तो मैंने समझ ली। लेकिन इस समय अगर ताईजी हमें इस घर से भी निकाल दें, तब क्या होगा? तब क्या तुम्हारा भगवान हमारी खोज-खबर लेगा?"

मां को इतनी बातें करने की फुर्सत नहीं थी। एक ही तो कमरा था। उसी कमरे के एक कोने में रसोई की व्यवस्था की गई थी। मां कोयले का चूल्हा सुलगा रही थी। तभी उस पार से ताई जी की आवाज़ सुनाई पड़ी, "अजी, सुनते हैं? कोयले के धुएं से समूचे घर में अंधेरा हो गया। अजी, सुनते हैं? कहां गए आप?"

ताऊ जी उस समय कहीं पास ही थे।

ताई जी ने कहा, "आप कान से तो बहरे हो गए हैं, ठीक है। लेकिन

आपकी आंखों को और आपके दिमाग को क्या हो गया ?"

"क्यों, क्या हो गया फिर ?"

ताई जी ने कहा, "धुआं दिखाई नहीं पड रहा है क्या ? हम सब की आंखें जल रही है।···और क्या आपकी आंखें धुआं लगने पर भी नही जलती ?"

"सचमुच इतना धुआ आखिर आया कहां से ?"

ताई जी ने कहा, "धुआ और कहा से आएगा ? पास के घर मे ही आ रहा है। सोने के कमरे मे चूल्हा जलाने पर धुआ नहीं होगा क्या ?"

ताऊ जी बोले, "सो किया भी क्या जा सकता है, बताओ ? सिर्फ एक कमरा है। आंगन तक नही है कि वहा रसोई की जा सके। खैर, यह धुआ अधिक देर तक रहेगा नही। थोडी देर मे ही कोयले सुलग जाएगे और धुआं कम हो जाएगा। थोडी देर की तकलीफ है, सहन करनी ही होगी।"

ताऊ जी ने अगर कुछ बर्दास्त करने की कोशिश की, तो वह भी ताई जी से सहा नही गया।

उन्होने कहा, "तो फिर आप घर मे रहिए। जब तक धुआ कम नही होता, तब तक मैं घर के बाहर जाकर इन्तजार करती हूं। जरा लोगों को भी पता चले कि आपने मुझे कितना सुख दे रखा है।"

'ताऊ जी बोले, "तो फिर मैं उन लोगो से जाकर कहू कि वे घर छोड कर चले जाए।"

ताई जी ने कहा, "यह सब आप समझिए। वह आपके छोटे भाई की बहू है···। आपको क्या करना है, यह आप ही समझिए। मैं तो पराये घर से आई हूं। मैं किसी को घर छोडकर चले जाने के लिए कहू, यह शोभा नहीं देता।"

ताऊ जी शायद फिर ताई जी की ओर फटकार बर्दाश्त नहीं कर पाए। वे तुरंत राजू के घर का दरवाजा खटखटाने लगे...।

"राजू, ओ राजू ?"

राजू ने कहा, "मां, ताऊ जी बुला रहे हैं। क्या मैं जाऊं ?"

मां ने कहा, "हां, जाओ। दरवाजा खोल दो। ताऊ जी क्या कह रहे हैं, सुन आओ।"

राजू के दरवाजा खोलते ही ताऊ जी गरज उठे, "क्यों रे, तेरी मां कहां है ? घर में इतना धुआं क्यों हो रहा है ? इस धुएं के मारे हमारा दम घुट रहा है। हमें घर में रहने नहीं दोगे क्या ? जरा अपनी मां को तो बुलाओ...।"

मां झट-पट घूंघट निकालकर सकुचाई-सी अपने जेठ जी के सामने आकर खड़ी हुई।

ताऊ जी ने कहा, "क्यों बहू, तुमने क्या समझ लिया है ? तुम्हारे इस धुएं के कारण क्या हम लोग घर छोड़कर भाग जाएं ?"

मां ने सिर झुकाकर ही जवाब दिया, "कोयले का थोड़ा धुआं तो होगा ही। खाना नहीं पकाने पर भी काम नहीं चल सकता।"

"तो क्या समय-असमय किसी भी समय चूल्हा जलाकर बैठ जाओगी ? चूल्हा सुलगाने का भी तो एक समय होता है। हम लोग भी तो चूल्हा जलाते हैं। हम लोग तो तुम्हारी तरह किसी को तकलीफ नहीं पहुंचाते। इसलिए तुम्हें तो सोचना ही चाहिए...।"

मां ने कहा, "मुझे दूसरों के घरों का काम निपटाने के बाद चूल्हा जलाने का समय मिलता है। आखिर तो मुझे दूसरों के घरों में काम करना पड़ता है।"

"तो फिर चूल्हे को जलाकर कमरे में नहीं रखा करो। उसे रास्ते में किनारे रख दिया करो। जब कोयले सुलग जाएं, तब चूल्हा भीतर ले

ग्राया करो।"

अचानक न जाने कहा से ताई जी प्रगट हो गई। उन्होंने कहा, "चून्हा तो हम भी जलाते है, खाना भी पकाते हैं। पर हम लोग तुम्हारी तरह जान-बूझकर दूसरो को परेशान नही करते।"

मा ने कहा, "मैंने जान-बूझकर किसी को परेशान करने के लिए चूल्हा नहीं जलाया दीदी। रात के ग्रतिरिक्त तो मुझे समय मिल नहीं पाता, इसीलिए इस समय मैंने चूल्हा जलाया है। राजू को कुछ बनाकर खिला दूंगी। वह ग्रभी ही राजेन भइया के घर से पढकर ग्राया है।"

ताई जी ने कहा, "सो यदि तुम यहा नही निभा सकती तो, यह घर छोडकर कोई ग्रौर घर देखो। गरीबो के मुहल्ले में बहुत-से घर किराये पर मिल जाएंगे। वहा जाकर दिन-रात, दोपहर-शाम जब चाहे खुशी से चूल्हा जलाती रहना, वहा तुम्हे कोई मना नही करेगा। यह तो सरासर जान-बूझकर दूसरे को परेशान करना है।"

मा ने कहा, "नहीं दीदी, मैं तुम्हारे पाव छूकर कहती हू···। किसी को परेशान करने की मेरी इच्छा नही थी। रात को छोडकर तो ग्रौर खाना पकाने का समय ही नही है मेरे पास। दो घरो का काम निपटाकर घर ग्राती हू ग्रौर भात पकाती हू। मैं तो विधवा ग्रौरत हूं, रात मे न भी खाऊ तो कोई हर्ज नही। लेकिन राजू सुबह खाकर स्कूल जाता है ग्रौर उसके बाद वह राजेन भइया के पास पढने चला जाता है। मैं मां होकर उसे खाना पका कर भी नही खिला सकती क्या ? मुझे ग्राप लोगों ने सिर्फ एक कमरा दिया है। इस कमरे को छोडकर कही चूल्हा सुलगाने की जगह भी नहीं है। मैं क्या करू, तुम्हीं बताग्रो दीदी···।"

ताऊ जी बोले, "क्यो, घर के सामने रास्ता नही है क्या ? क्या रास्ते के किनारे चूल्हा नहीं सुलगा सकती ?"

ताई जी ने कहा, "दरग्रसल लड़का फर्स्ट जो ग्राया है, उसका घमण्ड

ाहीं होगा क्या ? हम क्या कुछ समझते ही नहीं ? इस घर को छोड़कर तुम लोगों को कोई और इन्तजाम करना होगा, मैं साफ-साफ कहे जा रही हूं।"

मां न कहा, "यह मेरे श्वसुर का घर है। इस घर को छोड़कर मैं कहां जाऊंगी, तुम्हीं बताओ दीदी ?"

ताई जी बोलीं, "यह श्वसुर जी का घर है, यह मुझे सुनाने की जरूरत नहीं। यह मुझे भी मालूम है। लेकिन यह नया मकान तुम्हारे जेठ जी के रुपयों से बनाया गया है, यह भी क्या तुम्हें बतलाना पड़ेगा ?"

मां के मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला। उसकी आंखों से आंसू बह निकले।

ताई जी ने कहा, "रोने से ही सात खून माफ नहीं हो जाते, समझी ? साफ बात में डर कैसा ? जरा बताओ तो सही, देवर जी कचहरी से भला कितने रुपये कमाकर लाते थे ? तुम्हारे जेठ जी अगर अपने खून-पसीने की कमाई से इस घर को न सींचते तो क्या तुम लोग इतने आराम से रह पाते ? मुंह से कभी कुछ मैंने कहा नहीं, इसीलिए क्या ? इस मकान का जो हिस्सा तुम्हें दिया था, उसका जरा भी लिहाज नहीं तुम्हें ? तुम इतनी बेशर्म हो गई हो ? और फिर सुना रही हो कि मेरे श्वसुर का घर है। श्वसुर के घर के नाम पर तो था सिर्फ टीन की छप्पर वाला एक कमरा। उस घर से यह पक्का मकान किसकी वजह से बना है, जरा बताना तो ? तुम्हारे जेठ जी अगर नौकरी करके यहां पक्का मकान, बरामदा और आंगन न बनवाते तो क्या यहां तुम लोग सिर छिपा सकते थे ?"

राई-सी बात थी, पहाड़ बन गई। मामूली-से कोयले के धुएं को लेकर राजू के छोटे-से कमरे के बीच लंका-काण्ड घट गया।

राजू की मां ने कहा, "तुम अगर यही कहती हो तो मैं यह घर छो

दूगी दीदी। लेकिन इसी क्षण तो घर छोड़ नहीं सकूंगी। मुझे दो दिन की मुहलत दो दीदी। घर ढूंढने में थोड़ा समय तो लगेगा ही। ग्राजकल क्या इतनी ग्रासानी से मकान मिलता है ?"

ताई जी ने कहा, "ठीक है, वही करो। हमारा भी पिण्ड छूटे···।"

यह कहकर ताई जी झट-पट चली गईं। उनके पीछे-पीछे ताऊ जी भी चले गए।

मां उस समय तक भी रो रही थी। राजू पत्थर की मूरत बना खड़ा था।

थोड़ी देर बाद उसने कहा, "मा, तुमने यह क्यों कहा कि तुम मकान छोड़ दोगी ? यह मकान तो हम लोगों का है।"

मा उसी तरह ग्रांखों पर ग्राचल रखे रो रही थी। मा ने कोई जवाब नहीं दिया।

राजू ने फिर कहा, "मां, ग्रो मा··। तुमने तो कह दिया है कि तुम यह घर छोड़कर चली जाग्रोगी।"

मा ने फिर भी कुछ न कहा। वह सिर्फ रोती रही।

राजू मां के पास ग्रा गया। उसने कहा, "मा, तुम बोलती क्यों नहीं ? कुछ तो बोलो। तुमने ताई जी से घर छोड़ने का वादा क्यों किया मां ?"

मां ने फिर भी कुछ नहीं कहा। वह उसी तरह ग्रांखों पर ग्राचल रखे रोती रही।

राजू ने कहा, "तुम तो कहा करती हो कि भगवान है, तो कहा गया तुम्हारा भगवान ? भगवान यदि सब कुछ देखता है तो क्या हमारी तकलीफें उसे दिखाई नहीं देतीं ?"

भगवान की बात सुनते ही मा ने ग्रांखों से ग्राचल हटाया ग्रौर कहा, "यह सब तुम्हारे कारण ही हुग्रा है। तुम्हारे कारण ही ग्राज यह झंझट-

झमेला हुआ है।"

राजू ने कहा, "वाह रे, मैंने भला क्या किया है ?"

मां ने कहा, "तूने ही तो सारा सत्यानाश किया है। परीक्षा में फर्स्ट होने की तुझे क्या पड़ी थी ? किसने तुझसे कहा था फर्स्ट आने के लिए ? अब तू ही समझ।"

राजू ने कहा, "अगर मुझे फर्स्ट कर दिया गया है तो इसमें मेरा क्या कसूर ? मैं क्या जान-बूझकर फर्स्ट आया हूं ?"

मां ने कहा, "तो क्या इसी लिए ठीक जिस बार विनोद फेल हुआ है, उसी बार तुझे फर्स्ट होना चाहिए था ?"

राजू ने कहा, "तो क्या विनोद को मैंने फेल करवा दिया है ? विनोद के फेल होने में मेरा कोई कसूर है क्या ? वह अगर फेल हो गया, तो मैं क्या कर सकता हूं ! आखिर राजेन मामा ने मुझे इतनी अच्छी तरह पढ़ाया क्यों ?"

मां शायद सोच रही थी कि किस तरह यह घर छोड़ देगी। यह घर छोड़ने के बाद वह कहां जायेगी।

उसने कहा, "आज की रात बीत जाने दे। तू खा-पीकर सो जा। कल मैं जो कुछ करना है, करूंगी।"

राजू ने पूछा, "तुम्हें कहां मकान मिलेगा ? तुम्हें कौन किराये पर मकान देगा ? इतने रुपये तुम कहां से लाओगी ?"

मां ने कहा, "सिर के ऊपर भगवान तो है। वह सब कुछ देख रहा है। वही सारा इन्तजाम कर देगा। मैंने तो अपनी समझ में किसी का कुछ नुकसान किया नहीं, अपनी समझ में किसी का बुरा चाहा नहीं और सपने में भी मैंने कभी ऐसा नहीं सोचा कि किसी का बुरा हो। तो फिर हमारा भी कुछ बुरा क्यों होगा ?"

राजू ने पूछा, "तो फिर अब तुम क्या करोगी मां ?"

मां ने कहा, "इस समय तू खा-पीकर सो जा। उसके बाद सोचकर देखती हूं कि कहां जाने पर किराये का घर मिल सकता है।"

"लेकिन कहीं घर अगर मिल भी गया तो भी हमें भाड़े के रुपये तो गिनकर देने पड़ेंगे। कौन देगा हमें वे रुपये ?"

मा ने कहा, "भगवान देगा।"

"भगवान किस तरह देगा ?"

मा ने कहा, "भगवान क्या मेरी हथेली में रुपये रख जायेगा भला ? शायद वह मुझे और दो घरों में काम दिलवा देगा। तीस रुपये भी अगर मुझे मिल जाएं तो मैं काम करने के लिए तैयार हूं। उन रुपयों से मैं एक कमरा किराये पर ले लूंगी।"

"तीस रुपयों में क्या किराये का घर पा सकोगी ?"

"और कहीं अगर घर न भी मिले तो जेलेपाड़ा के गरीबों के मुहल्ले में जरूर मिट्टी का एक घर पा जाऊंगी। तू इसके बारे में बिलकुल फिक्र मत कर। भगवान की कृपा रही तो जरूर एक घर मिल जायेगा। तू इस समय खा-पीकर सो जा। आज मैं और कुछ नहीं बनाऊंगी। तू सिर्फ आलू भात खा ले।"

उसके बाद रात गहराती गई। राजू खा-पीकर अपनी मां के पास सो गया था। लेकिन राजू की मां की आंखों में उस समय नींद न थी। मा उस समय एकाग्र मन से भगवान से विनती कर रही थी—"हे भगवन्, मेरे राजू पर नजर रखना। राजू को मैं पाल-पोस कर बड़ा कर पाऊं! तुम से मैं और कुछ भी नहीं मांगती। मैं अपना कुछ भी भला नहीं चाहती, तुम सिर्फ राजू को अपने पैरों पर खड़ा कर दो। मैं अपनी आंखों से देखना चाहती हूं कि वह अपने पैरों पर खड़ा है। मुझे खुद अपने लिए कुछ भी नहीं चाहिए…।"

दिन भर में चार घरों का काम करने पर थकावट तो होगी ही।

ाद उसे अपने घर पर आकर भी रसोई बनानी पड़ती थी और
भी मांजने पड़ते थे। उस थकावट में चूर मां की आंख कब लग गई
उसे पता भी नहीं चला।

□

राजू के मुंह से ही हम लोगों ने पहली बार सुना कि उन लोगों ने घर बदल लिया है।

हमने पूछा, "घर क्यों बदल लिया है रे राजू तुम लोगों ने ? वह घर तो तुम लोगों का अपना घर था...।"

"ताऊ जी ने हमसे चले जाने को कहा था। इसलिए हम उस घर से निकल गए।"

"अभी तुम लोग कहां हो ?"

"जेलेपाड़ा मुहल्ले में। ठीक पोखर के किनारे ही।"

"वहां तो नल का पानी और बिजली की रोशनी, कुछ भी नहीं है। अच्छा, यहां किराया कितना देना पड़ता है ?"

राजू ने कहा, "बीस रुपये।"

राजू की मां दूसरों के घरों में महरी का काम करके घर का खर्च चलाती थी, यह हमें मालूम था। फिर भी उनको एक सुविधा थी कि उन्हें मकान-भाड़ा नहीं देना पड़ता था।

राजू ने कहा, "मां ने और दो घरों का काम पकड़ लिया है। वहां वह बर्तन मांजती है और कपड़े भी धोती है।"

नन्दू ने कहा, "तब तो तुम्हें जरूर मुकदमा ठोक देना चाहिए था ताऊ जी पर तुमने मुकदमा क्यों नहीं कर दिया ? मामले-मुकदमे

इतना डरते क्यों हो ? मेरे पिताजी तो वकील हैं। मुकदमा करने पर मेरे पिताजी जरूर तुम लोगों को जिता देते।"

राजू ने कहा, "नहीं, मां कहती है कि इसका फैसला खुद भगवान ही करेगा।"

नन्दू ने कहा, "तुम लोग बस भगवान-भगवान करते ही खत्म हो जाओगे। भगवान ही यदि सारे फैसले कर देगा तो फिर इतने वकील, इतने जज और इतने बैरिस्टर किसलिए हैं ? क्या घास छीलने के लिए ?"

राजू ने कहा, "नहीं भाई, मां कहती है कि गरीबों का कोई नहीं होता। एक मात्र भगवान को छोड़कर गरीबों का और कोई भी नहीं होता।"

"नहाता कहां है तू ?"

"क्यों हमारे घर के पास ही तो तालाब है। मुहल्ले के सभी लोग वहीं नहाते हैं।"

नन्दू ने कहा, 'देखना, तुझे जरूर एक दिन बुखार आएगा। नहीं तो किसी दिन तुझे सांप काट खायेगा…।"

लेकिन नहीं…। हजारों तकलीफों के बावजूद किसी भी दिन राजू को बुखार नहीं आया। राजू कहता, "दुःख और तकलीफें सहन करना ही अच्छा है। जिन्दगी में एक न एक दिन इसका फल मिलेगा ही।"

राजू की तकलीफें देखकर हमें कोई सहानुभूति नहीं होती, वरन् हमें मजा ही आता।

हम लोग पूछते, "तेरी मां तो सुबह से ही घर-घर बर्तन मांजती फिरती है। तो फिर भात कौन पकाता है ?"

राजू कहता, "क्यों ? मैं जो हूं…।"

"क्या तू भात पका सकता है ?"

"हां भाई, मैं भात-दाल सब कुछ पका सकता हूं। आलू और भात

बुलवाकर उन्होंने न जाने क्या लाने का हुक्म दिया।

राजू ने देखा कि वह नौकर एक तश्तरी ले आया जिस पर दो संदेश और दो राजभोग रखे हुए थे।

राजेन मामा ने कहा, "पहले यह सब खा लो। इसके बाद पढ़ना। तुम किताब रखकर पहले खाना शुरू करो।"

राजू की आंखों में आंसू आ गए।

उसने कहा, "मुझे तो अभी भूख नहीं लगी है। आपने ये चीज़ें क्यों मंगवाई हैं?"

राजेन मामा ने गम्भीर स्वर में कहा, "जो कुछ कहता हूं, वही करो। तुम्हारे लिए मैंने कुछ भी नहीं मंगाया है। मेरे समधी के घर में कुछ मिठाई आई थी। उसी में से मैंने तुम्हें भी मिठाई दी है। लो, खाओ।"

राजू ने तश्तरी से मिठाई उठाकर धीरे-धीरे खाना शुरू किया। उस समय भी उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे।

राजेन मामा ने पूछा, "तुम रो क्यों रहे हो? रोने की क्या बात हो गई?"

राजू की आंखों से और भी आंसू बहने लगे। वह कुछ कहना चाहता था, पर उसका गला रुंध गया।

राजेन मामा ने पूछा, "बोलो, क्या कहने जा रहे थे?"

राजू ने कहा, "मां ने कहा था कि गरीबों की तकलीफें भगवान ही समझ सकता है।"

राजेन मामा बोले, "हां, तुम्हारी मां ने तो ठीक ही कहा है। भगवान तो गरीबों की तकलीफें समझता ही है। इसमें क्या हुआ?"

राजू ने कहा, "नहीं, मां की बातों पर अब विश्वास हो रहा है।"

यह कहकर राजू फिर मिठाई खाने लगा। उसके बाद खाना शेष होने पर उसने पूछा, "यह तश्तरी मैं कहां धोऊं?"

राजेन मामा ने कहा, "नहीं, तुम्हें तश्तरी धोने की जरूरत नहीं। तुम गिलास का पानी लेकर अपने हाथ धो लो। यही काफी है।"

"लेकिन मैंने तश्तरी को जूठा कर दिया है।"

राजेन मामा ने कहा, "उससे क्या हुआ? हमारे घर पर वर्तन मांजने के लिए आदमी है। वही तश्तरी धो लेगा।"

उसके बाद कुछ रुककर उन्होंने कहा, "तुम कह रहे थे न कि तुम्हारी मां कहती है कि भगवान जरूर है। सो तुम्हारी मां ने झूठी बात नहीं कही है। जानते हो, एक दिन मैं तुमसे भी गरीब था। तुम्हारे कम से कम मां तो है। लेकिन दुनिया में जिसे अपना कह सकूं, ऐसा मेरा कोई भी नहीं था। मेरा अगर कोई था तो सिर्फ भगवान ही। उसी भगवान पर विश्वास करके ही मैं आज इतना बड़ा हुआ हूं। आज तुम यह जो तीन-तल्ला मकान देख रहे हो, इतने नौकर-चाकर जो हमारे घर में काम कर रहे हैं, यह सभी भगवान की देन है। भगवान के ऊपर हमेशा विश्वास रखना। तो फिर एक दिन मेरी तरह बड़े आदमी बनोगे। लेकिन एक बात गांठ में बांध लो। कभी भी झूठ मत बोलना और कभी भी घमण्ड नहीं करना। तभी तुम्हारी तरक्की होगी।"

काफी रात को घर लौटने पर राजू ने देखा कि उस समय तक मां उसके लिए विना खाए बैठी थी। मां जहां काम करती थी, वहां से उसे एक आदमी का खाना मिलता था। उसी भात को दो हिस्सों में बांट कर राजू और उसकी मां—दोनों खा लिया करते थे।

लेकिन उस दिन राजू ने कहा, "आज सारा भात तुम खा लो मां।"

"क्यों रे?"

राजू ने जवाब दिया, "मैं खाकर आया हूं, मां।"

"कहां खाया तूने? किसने खिलाया है रे?"

राजू ने कहा, "राजेन मामा ने।"

"क्यों ? यह क्या हुआ ?"

राजू ने कहा, "मेरा सूखा मुखड़ा देखकर शायद राजेन मामा समझ गए थे कि मैंने कुछ खाया नहीं है। उन्होंने मुझसे पूछा—तुमने आज क्या खाया है ? मैंने जवाब दिया—रोटी। राजेन मामा समझ गए कि मैंने बासी रोटी खाई है। इसीलिए घर के भीतर से एक तश्तरी में उन्होंने दो बड़े-बड़े सन्देश और दो राजभोग मेरे लिए मंगवा दिए।"

"लेकिन आज वे तुम्हें खिलाने क्यों लगे ?"

"उन्होंने कहा कि समधी के घर से मिठाई आई है। उसी में से उन्होंने मिठाई दी थी।"

उसके बाद कुछ रुककर राजू ने कहा, "जानती हो मां, खाते-खाते मुझे बहुत रुलाई आ रही थी।"

"क्यों रे ?"

राजू ने जवाब दिया, "सन्देश और राजभोग खाने में इतने मीठे थे कि बस तुम्हारी याद आ रही थी। सोच रहा था कि खुद न खाकर वह मिठाई शाल-पत्ते के दोने में रखकर घर ले आता तो हम दोनों मिल बाँटकर खाते। तुम अगर एक बार भी खाती तो हमेशा याद रखती। इतनी बढ़िया थी वह मिठाई··।"

मां ने कहा, "इससे क्या हुआ ? मिठाई यहां नहीं लाए हो, यह तुमने ठीक ही किया है। तुमने खा लिया है तो; बस समझ लो कि मैंने भी खा लिया। तेरे पिताजी जब ज़िन्दा थे, उस समय मैंने खूब रसगुल्ले और सन्देश खाए हैं।"

राजू ने कहा, "राजेन मामा ने और क्या कहा, जानती हो ? तुम जो कुछ कहा करती हो, राजेन मामा ने भी वही बात कही। उन्होंने कहा कि भगवान ऊपर से सब कुछ देख रहा है। राजेन मामा भी बचपन में हम लोगों की तरह ही गरीब थे। अपना कहने को राजेन मामा का कोई न

था। उसके वाद भगवान पर विश्वास रखने के कारण आज उनके पास तीन-तल्ला मकान है, वे इतने वड़े आदमी हो गए हैं।"

मां इस वात का भला क्या जवाव देती ! उसने सिर्फ यही कहा, "तो फिर ठीक है !"

राजू ने कहा, "मां, मेरे पास भी जव तीन-तल्ला मकान हो जाएगा, तव मैं तुम्हें दूसरों के घर काम नहीं करने दूंगा। तुम सिर्फ वैठी रहोगी उस समय। मैं तव तुम्हें रोज़-रोज़ वड़े-वड़े सन्देश और राजभोग खिलाऊंगा। तुम खाकर देखोगी कि मिठाई कैसी स्वादिष्ट लगती है !"

अगले साल विनोद फिर फेल हो गया। इस वार किस पर गुस्सा उतारा गया, मालूम नहीं। शायद स्कूल के मास्टरों पर ही गुस्सा उतारा गया हो !

ताऊ जी इस वार भी हेड मास्टर साहव के पास जा धमके। कहने लगे, "मेरा लड़का फेल हो गया है। इस वार अगर मेहरवानी करके उसे अगली क्लास में प्रोमोशन दे दें तो मैं उसके लिए और एक मास्टर रख दूंगा।"

हेड मास्टर अवनी वावू ने कहा, "पिछले साल भी आपने ऐसी ही वातें कही थीं। इसीलिए पिछले साल मैंने विनोद को प्रोमोशन दे दिया था। लेकिन इस वार वह अगली क्लास में नहीं जा पाएगा। वह परीक्षा में किताव देखकर नकल करता है, क्या यह आपको मालूम है ? उस वार मैंने उसे माफ कर दिया था, लेकिन इस वार ऐसा नहीं होगा।"

ताऊ जी ने कहा, "आपके स्कूल में पढ़ाई भी अच्छी नहीं होती···।"

अवनी वावू ने कहा, "अगर हमारे स्कूल में पढ़ाई अच्छी नहीं होती, तो फिर आप ही के भतीजे राजू की इतनी उन्नति कैसे हो रही है ? आप अगर चाहें तो अपने लड़के को किसी दूसरे वढ़िया स्कूल में ट्रांसफर करवा सकते हैं। देखिए, वहां जाकर [illegible] पास होता है या

फेल !"

ताऊ जी भवनी बाबू की बातें सुनकर कुछ नरम पड़े। उन्होंने कहा, "मेरा मतलब यह नहीं था। मैं तो यही कह रहा था कि उसे इस बार प्रोमोशन दे दीजिए; मैं उसके लिए अच्छा ट्यूटर रख दूंगा। मैं वादा कर रहा हूं।"

भवनी बाबू और क्या करते ? इस बार भी उन्होंने विनोद को अगली क्लास में प्रोमोशन दे दिया।



राजू की जिन्दगी में बचपन से ही बहुत-से तूफान आए हैं। किन्तु वह हमेशा हृदय में दृढ़ विश्वास लिए बढ़ा जा रहा था।

नन्दू अब तक दूसरी तरह का लड़का बन चुका था। हम लोग अब राजू से हंसी-मजाक नहीं करते। सचमुच दिन-ब-दिन राजू को देख-देखकर हम लोगों को उसके प्रति श्रद्धा होने लगी थी। सचमुच भगवान ने राजू की अच्छी तरह देख-भाल की थी।

उसकी मां दूसरों के घरों में काम करती। दूसरों के घरों का काम-काज निपटाकर मां देर से घर लौटती। और सुबह पांच बजे दूसरों के घर पर काम करने के लिए जाते वक्त मां राजू को जगा देती। राजू सुबह पांच बजे से ही अपना पाठ याद करने बैठ जाता। उसके बाद दस बजे आलू या बैंगन के भुरते के साथ रात का बासी भात खाकर राजू दरवाजे पर ताला बन्द करता और स्कूल चला जाता।

मां जब सारे काम-काज निपटाकर घर लौटती, उस समय दोपहर हो जाती। मां अपने हाथों में अपने लिए भात-तरकारी लेकर आती।

उसका आधा हिस्सा खाकर, बाकी मां रख दिया करती। उसका राजू स्कूल से लौटकर वही भात जो खाएगा···!

छुट्टी के दिन एक बार हम लोग राजू का घर देखने गए थे। बाबा रे, कैसी गन्दी बस्ती थी! उस बस्ती को हम लोग जेलेपाड़ा बस्ती कहा करते थे। जितने भी गरीब आदमी थे, सब वहीं रहते थे। बस्ती में नल का पानी नहीं था। वहां के सभी आदमी नलकूप से पीने के लिए पानी लाते। उसके अलावा नहाना-धोना और बर्तन मांजना—सभी काम पोखरे के पानी से किया जाता।

हमें देखकर राजू बहुत खुश हुआ। उसने पूछा, "क्या तुम लोग मुड़ी खाओगे?"

"मुड़ी!" हम लोगों ने पूछा, "क्या घर पर मुड़ी है?"

राजू ने कहा, "नहीं, घर पर तो मुड़ी नहीं है। मैं दुकान से खरीदकर ले आता हूं।"

हम लोगों ने कहा, "क्यों झूठ-मूठ हमारे लिए तुम पैसा बर्बाद करोगे?"

राजू ने हमारी बात नहीं मानी। वह मुड़ी की दुकान की तरफ भाग खड़ा हुआ। उसने कहा, "मैं अभी तुरन्त मुड़ी लेकर आता हूं। मैं गया और आया···। तुम लोग आराम से बैठो।"

हम चारों तरफ देखने लगे। पुआल का बना छप्पर था। सिर्फ एक कमरा था। मिट्टी के फर्श पर चटाई बिछी हुई थी। उसी चटाई पर मां और बेटा सोते थे। एक लालटेन टंगी हुई थी। पास ही एक छोटी चौकी के ऊपर मां काली की तस्वीर रखी हुई थी।

घर का माल-पत्तर जो कुछ था, बस यही था।

राजू देखते ही देखते मुड़ी लेकर हाजिर हो गया। उसने कांसे की एक तश्तरी में मुड़ी डाल दी। उसके बाद उसने कहा, "मैं मुड़ी के साथ

हरी मिर्च भी लाया हूं। तुम लोग हरी मिर्च चबाते-चबाते मुड़ी खाम्रो, मुड़ी खाने में बड़ी जायकेदार लगेगी।"

नन्दू ने पूछा, "यहां चौकी के ऊपर मा काली की तस्वीर क्यों रखी है रे ?"

राजू ने कहा, "हम लोग रोज मा काली की पूजा जो करते हैं ! मैं भी पूजा करता हू ग्रौर मा भी।"

"पूजा करते समय तुम मा काली से क्या कहते हो ?"

राजू ने जवाब दिया, "मा मे यही प्रार्थना करता हूं कि सब का शुभ हो, मंगल हो।"

"तुम पूजा करते हो, इसीलिए फर्स्ट ग्राते हो न ?"

राजू ने कहा, "यह तो मुझे नहीं मालूम। मा ने पूजा करने के लिए कहा है, इसीलिए पूजा करता हू। पूजा करने पर मन को शक्ति मिलती है, ग्रौर कुछ नही।"

नन्दू ने पूछा, "यहा मिट्टी के फर्श पर सोने मे क्या तुम लोगों को तकलीफ नही होती ?"

राजू ने कहा, "तकलीफ ग्रगर समझेंगे, तब न तकलीफ होगी। पहले तो हम पक्के मकान मे रहते थे। वहा हम जैसे थे, यहा भी ठीक उसी तरह ही हैं। सिर्फ मा को दूसरो के घरो मे काम करने मे कुछ ज्यादा तकलीफ होती है।"

"तो तुम्हारा भगवान तुम्हें तो परीक्षा मे फर्स्ट करवाता है ग्रौर फिर तुम्हारी मां के कष्ट क्यो नही मिटाता वह ?"

राजू ने जवाब दिया, "मां कहती है कि भगवान जो कुछ भी करना है, भले के लिए ही करता है।"

नन्दू ने पूछा, "इसमे तेरी मा का कौन-सा भला हुग्रा है ?"

राजू ने कहा, "यह तो मैं नहीं जानता। लेकिन जरूर इसमे भगवान

का कोई उद्देश्य छिपा हुआ है।"

हम लोग हमेशा जिस तरह राजू की बातों पर हंसा करते थे, उस दिन उसकी बातें सुनकर हम हंस नहीं सके। हमें राजू के प्रति बड़ी सहानुभूति और ममता होने लगी। अहा, राजू स्कूल में फर्स्ट ज़रूर आता है। लेकिन उसे कितनी तकलीफें उठानी पड़ रही हैं। और फिर तकलीफों को वह तकलीफ समझता भी नहीं। यह कैसे संभव हो रहा है?"

इसी तरह दिन बीत रहे थे। हठात् एक दिन मां बहुत घबराई-सी घर में आई। घर में आते ही उसने कहा, "अरे राजू, सुना है कि तेरे ताऊ जी को एक बड़ी खराब बीमारी हो गई है रे। अब क्या होगा, मैं तो यही सोच रही हूं!"

राजू ने कहा, "इसीलिए पिछले कई दिनों से विनोद स्कूल में दिखाई नहीं दे रहा।"

मां ने कहा, "नहीं रे, सुना है कि विनोद को साथ लेकर तेरी ताई जी अपने मैके चली गई हैं।"

"तो फिर ताऊ जी की देखभाल कौन कर रहा है?"

"कोई भी नहीं।"

राजू ने पूछा, "ताऊ जी को क्या बीमारी हुई है?"

मां ने कहा, "चेचक···।"

राजू ने पूछा, "तो क्या मां, मैं जाकर ताऊ जी को देख आऊं?"

मां ने कहा, "तू जाकर क्या करेगा?"

राजू ने कहा, "मैं जाकर डाक्टर को बुला लाऊंगा। मैं उन्हें दवा खिलाऊंगा, उनका माथा सहला दूंगा और पैर दबा दूंगा।"

मां ने कहा, "चल बुद्धू कहीं का, चेचक निकल आया है; इसमें डाक्टर क्या करेगा! तुझे तो स्कूल जाना है, पढ़ाई-लिखाई देखनी है। उसके अलावा क्या तू जानता है कि रोगी की सेवा किस तरह की जाती है।

राजू ने कहा, "मगर मैं नहीं जाऊंगा तो कौन जाएगा ? तुम तो जा नहीं सकोगी। तुम्हें तो कितने ही घरों में काम करने हैं। वह काम तो तुम छोड़ नहीं सकोगी।"

"लेकिन क्या यही बड़ी बात है रे ? और उस तरफ जो एक आदमी घर में पड़ा-पड़ा कराह रहा है, उसे एक बूंद पानी तक देने वाला भी कोई नहीं है। अब मैं क्या करूं, बता तो ?"

राजू ने कहा, "ठीक ऐसी विपत्ति के समय ताई जी क्यों चली गईं मां ? विपत्ति के समय ही तो आदमी-आदमी की देख-भाल करता है। ताई जी तो ताऊ जी की बिलकुल अपनी हैं, हम तो ठहरे पराये। हम लोगों को ताई जी ने कितना सताया है, क्या वह सब तुम भूल गई हो ?"

मां ने कहा, "अरे राजू किसी के भी विपत्ति में पड़ने पर ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए। ठीक इसी समय तेरी आखिरी परीक्षा होने वाली है। तुझे यहां अकेला छोड़कर भी तो मैं वहां कैसे जाऊं ?"

राजू ने कहा, "उसके बजाय तुम यहां रुको। मैं जाकर देख आता हूं। वहां से लौटकर मैं तुम्हें पूरी खबर दूंगा।"

मां ने कहा, "नहीं रे, चेचक बड़ा ही छुआछूत का रोग है। अगर तुझे भी चेचक हो गया तो फिर न तो तू बच पाएगा और न ही मैं बचूंगी। उसके बजाय तो मैं ही वहां जाकर उनकी देखभाल करती हूं। इसमें मेरा जो भी हो, देखा जाएगा।"

इसके बाद कुछ रुककर उसने फिर कहा, "तेरी ताई जी को क्या हो गया है, जरा देख तो ! छूत के डर से ताऊ जी को अकेला छोड़कर ये अपने मायके चली गईं। ताऊ जी को कौन देखेगा, उनका क्या होगा; यह दीदी ने एक बार सोचा तक नहीं।"

राजू ने कहा, "ठीक हुआ है। खूब बढ़िया हुआ है। जिस तरह

उन्होंने हमें घर से अलग कर दिया और फिर घर से बाहर निकाल दिया, उसी तरह की उन्हें भी सीख मिल गई है।"

मां बिगड़ उठी। उसने कहा, "ये सब बातें जुबान पर नहीं लाते। तुम अब बड़े हो गए हो, लिख-पढ़ गए हो। ये सब बातें क्या तुम्हें शोभा देती हैं? ऐसी बातें फिर कभी भी मुंह से नहीं निकालना। ऐसी बातें सोचना भी पाप है।"

मां बहुत चिन्तित लग रही थी।

मां के पास उस समय भी सोने का एक गहना बचा हुआ था। उसके हाथ में सोने का एक तावीज़ था। वात की बीमारी के कारण पिता जी ने वह तावीज़ बनवा दिया था।

मां ने कहा, "मैं आती हूं, तू घर पर ही बैठा रह।"

मां को लौटने में करीब आधा घंटा लगा। मां आकर बोलीं, "यह ले पचास रुपये। ये रुपये तू अपने पास रख ले। और मैं अपने पास दस रुपये रख रही हूं। शायद कुछ खरीदना पड़े।"

यह कहकर मां थोड़ी देर के लिए रुकी और फिर उसने कहा, "तू कुछ दिनों तक स्कूल मत जा। घर पर रहकर ही पढ़ाई कर। स्कूल जाकर तू कह आ कि ताऊ जी की बीमारी के कारण तू स्कूल नहीं आ पाएगा।"

राजू ने पूछा, "लेकिन मैं क्या खाऊंगा? और तुम ही भला क्या खाओगी?"

मां ने कहा, "मेरी तो उपवास करने की आदत है। और तू कुछ दिनों तक खुद भात पकाकर नहीं खा पाएगा क्या? उधर एक आदमी की जिन्दगी खतरे में है, और ऐसे समय में खाना-पीना ही तेरे लिए बड़ी बात है क्या?"

"लेकिन तुम जिनके घरों में काम करती हो, वे क्या करेंगे? वे अगर

तुम्हें बुलाने के लिए आएं तो मैं क्या जवाब दूंगा ?"

"जो सच्ची बात है, वही बताना। कह देना कि ताऊ जी बीमार हैं, मां वहीं गई है।"

यह कहकर मां चली गई। वह और वहां रुकी नहीं।

राजू को स्कूल में गैरहाजिर देखकर गणित के मास्टर साहब ने पूछा, "आज राजू कहां है ? क्या राजू नहीं आया है ?"

गणित के मास्टर साहब का चहेता छात्र था राजू। और सिर्फ गणित के मास्टर साहब का ही क्यों, सब का चहेता था राजू। राजू के क्लास में न आने पर मानो अध्यापकों को पढ़ाने में आनन्द ही नहीं आता था।

आखिरकार जब बारह बज गए, तब राजू आया। वह क्लास में नहीं आया, सीधा हेडमास्टर साहब के पास चला गया।

हेडमास्टर साहब भी राजू को खूब प्यार करते थे। उन्होंने पूछा, "क्या बात हुई ? तुम कैसे आए हो ?"

राजू ने कहा, "मैं आपके पास छुट्टी मांगने आया हूं सर।"

"क्यों ?"

हेडमास्टर साहब तो ताज्जुब में पड़ गए थे। राजू तो जीवन में कभी भी छुट्टी नहीं लेता था।

उन्होंने पूछा, "हायर सैकेण्डरी की परीक्षा बिलकुल करीब है। ऐसे समय में तुम छुट्टी मांग रहे हो ? तुम ही हो हमारे स्कूल के सबसे बढ़िया छात्र। तुम्हारे ऊपर हमारी बहुत-सी आशाएं हैं। तुम आखिर छुट्टी क्यों मांग रहे हो ?"

राजू ने कहा, "मेरे ताऊ जी बहुत बीमार हैं, सर।"

"ताऊ जी ? ताऊ जी बीमार हैं ? ताऊ जी के घर से तो तुम लोग अलग हो गए हो न ? तुम्हारे ताऊ जी ने तो तुम लोगों को घर से निकाल

दिया है, ऐसा सुना था। तुम लोग तो इस समय अलग घर में रहते हो। उनकी बीमारी से तुम लोगों को क्या लेना-देना है ?"

राजू ने कहा, "ताई जी विनोद को साथ लेकर अपने मायके चली गई हैं। ताऊ जी को चेचक हो गया है। उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। एक बूंद पानी तक देने वाला कोई नहीं। इसीलिए मां उनकी सेवा-टहल करने चली गई है। और मैं अपने हाथों से भात पकाकर खा लिया करता हूं।"

"और पढ़ाई-लिखाई ? पढ़ाई-लिखाई कब करते हो ?"

राजू ने जवाब दिया, "पढ़ाई-लिखाई तो दिन-भर ही करता हूं। और जहां मैं समझ नहीं पाता हूं, उसे राजेन मामा के पास जाकर समझ लेता हूं।"

"अच्छा, ठीक है। जितनी जल्दी हो सके, स्कूल आने की कोशिश करना। कुछेक बढ़िया विद्यार्थियों के लिए हम लोग स्पेशल कोचिंग क्लास का इन्तजाम करेंगे। मैं चाहता हूं कि तुम भी स्पेशल कोचिंग क्लास में शामिल हो सको।"

राजू हेडमास्टर साहब को प्रणाम करके वापस घर लौट पड़ा।

□

राजू की मां जैसे ही अपने पुश्तैनी घर के भीतर पहुंची, उसके जेठ जी ने क्षीण स्वर में पूछा, "कौन है ?"

इसके बाद राजू की मां को देखकर राजू के ताऊ जी रोने लगे। कहने लगे, "तुम आई हो बहू ? यह देखो, मैं तो मरने की हालत में हूं। यहां घर पर कोई नहीं है। तुम्हारी जेठानी तो अपने लड़के को लेकर ऐसे

समय में अपने बाप के घर चली गई है।"

राजू की मां ने पूछा, "क्या थोड़ा पानी दूं, पिएंगे ?"

राजू के ताऊ जी ने कहा, "तुम्हें पानी कहां मिलेगा ?"

राजू की मां बोली, "मैं देखती हूं कि पानी कहा है !"

यह कहकर राजू की मां एक गिलास में पानी ले आई। उसने कहा, "आप मुंह जरा ऊपर कीजिए। मैं थोड़ा-थोड़ा पानी आपके मुंह में डाल देती हूं।"

राजू के ताऊजी बहुत कमजोर हो गए थे। पानी पीने पर ऐसा लगा कि मानो उन्हें बहुत आराम मिला हो। सारा शरीर चेचक के दानों से भर गया था। बातचीत करने में भी उन्हें तकलीफ हो रही थी।

राजू की मां ने पूछा, "क्या बाजार से आपके लिए कुछ दूध और फल ला दूं, खाएंगे ?"

राजू के ताऊ जी की आंखें भर आईं। कहने लगे, "बहू, तुम भी भला क्यों आई हो ? इस रोग के रोगी के पास भला कोई आता है ?"

राजू की मां ने कहा, "देखती हूं कि आपके लिए थोड़े-से दूध का इन्तजाम कर पाती हूं कि नहीं।"

"तुम पैसे कहां से लाओगी ? मेरे रुपये-पैसे सभी तो तुम्हारी जेठानी के पास ही रहते थे। वह शायद सारे रुपये-पैसे लेकर चली गई है।"

राजू की मां ने कहा, "मेरे पास रुपये हैं। मैं अभी दूध और फल ले आती हूं।"

राजू के ताऊ जी ने कहा, "भला तुम ही मेरे लिए इतना क्यों करोगी, बहू ? मैंने तो तुम लोगों पर बहुत अत्याचार किए हैं। मैंने तुम लोगों का चूल्हा-चौका अलग कर दिया था और उसके बाद मैंने तुम लोगों को घर से बाहर निकाल दिया था। तुम क्या सोचती हो कि मुझे मेरे पापों की सजा नहीं मिलेगी ?"

उसके बाद कुछ रुककर उन्होंने कहा, "और फिर देखो बहू, जिनकी बातों में आकर मैंने तुम लोगों पर इतने जुल्म ढाए; वे सभी मुझे विपत्ति के मुंह में अकेला छोड़कर चले गए हैं। और तुम हो कि आज मुझे बचाने आई हो !"

"आप शान्त रहिए। आपको तकलीफ होगी..."

"तकलीफ ? मेरी तकलीफों की बात कर रही हो ? लेकिन मैंने भी तो तुम लोगों को क्या कम तकलीफें दी हैं, बोलो तो ?"

राजू की मां ने कहा, "आप थोड़ी देर इन्तजार कीजिए। मैं अभी आपके लिए दुकान से थोड़ा-सा दूध ले आती हूं।"

यह कहकर राजू की मां रसोईघर से एक कटोरा लेकर बाहर निकल गई। रास्ते के मोड़ पर ही एक बड़ी मिठाई की दुकान थी। उसने वहां से पाव-भर दूध खरीदा और फिर एक फल की दुकान से एक नारंगी ली। उसके पास जो दस रुपये थे, उन्हीं रुपयों से दूध और फल खरीदकर वह अपने जेठ जी के घर लौटी। दरवाजा खोलने या बन्द करने के लिए भी कोई आदमी नहीं था। चोर या डकैत—कोई भी जब चाहे भीतर घुस सकते थे। पर उन्हें रोकने वाला भी कौन था ?

राजू के ताऊ जी ने, राजू की मां के आने की आहट पाकर आंखें खोल दीं। उन्होंने पूछा, "कौन है ?"

राजू की मां ने कहा, "मैं आपके लिए नारंगी लाई हूं। थोड़ा-सा नारंगी का रस पी लीजिए। उसके बाद थोड़ा दूध ले लीजिएगा।"

"तुम्हें रुपये कहां से मिले बहू ? तुम्हारे पैसों से लाई हुई चीज क्या मैं खाऊंगा ? क्या यह भी मेरी किस्मत में लिखा था ?"

राजू की मां ने कहा, "आप जरा मुंह खोलिए।"

राजू के ताऊ जी ने कहा, "नहीं, मैं हर्गिज मुंह नहीं खोलूंगा। मैं न तो नारंगी का रस पिऊंगा और न ही दूध।"

मा ने कहा, "लेकिन खाए बगैर आप बचेंगे कैसे ?"

ताऊ जी ने कहा, "मुझे अब जिन्दा रहने की इच्छा नहीं है बहू। जो मेरे अपने थे, जिन्हें मैं सबसे बढ़कर अपना मानता था, वे ही जब मुझे विपत्ति के समय अकेला छोड़कर चले गए हैं और सारे रुपये-पैसे अपने साथ ले गए हैं, तो फिर मैं जिन्दा रहकर क्या करूंगा बहू ? अब किसके लिए इस घर-संसार की माया में भटका रहूं ? उन लोगों के कारण मैंने तुम लोगों की कितनी बेइज्जती तक की है।"

मा ने कहा, "छोड़िए भी, उन सब बातों को अभी रहने दीजिए। आप जरा मुंह खोलिए तो।"

बहुत आरज़ू-मिन्नतों के बाद ताऊजी ने मुंह खोला। मां ने उनके मुंह में थोड़ा-सा नारंगी का रस डाल दिया। उसके बाद फिर मुंह खोलने पर उमने ताऊ जी को एक कप दूध पिला दिया।

इसी तरह रोज चल रहा था। रोज ही मा दिन-रात जाग-जागकर ताऊ जी की सेवा करती।

एक दिन ताऊ जी ने पूछा, "अच्छा बहू, तुम जो मेरी इतनी सेवा कर रही हो; परन्तु यह तो बताओ कि तुम कब खाती हो, क्या खाती हो ?"

मां ने कहा, "मैं ठहरी एक विधवा औरत। मेरी तो निराहार रहने की आदत है। इस बात की आपको चिन्ता-फिक्र करने की ज़रूरत नहीं।"

"और राजू ? तुम्हारा लड़का ?"

"वह उसी ज़ेलेपाड़ा की झोंपड़ी में है।"

"उस घर का किराया कितना लगता है ?"

"वह तो मिट्टी की झोपड़ी है और उसका छप्पर पुवाल से बना हुआ है। और फिर नल का पानी भी वहां नहीं है। सिर्फ पास ही में एक बड़ा तालाब है। सभी लोग वहीं नहाते-धोते हैं।"

"किराया कितना लगता है, यह बताओ न ?"

"बीस रुपये।"

"बीस रुपये भाड़ा चुकाने पर तुम गृहस्थी कैसे चला पाती हो? खाने-पीने के खर्च के अलावा राजू की स्कूल-फीस का भी तो खर्च है!"

मां ने कहा, "राजू की फीस माफ है। राजेन भइया से हेडमास्टर साहब के नाम एक दरख्वास्त लिखवाकर दी थी। हेडमास्टर साहब ने राजू की फीस माफ कर दी है।"

"और तुम जो इस समय जी-जान से मेरी सेवा कर रही हो। इस समय राजू की देखभाल कौन करता है? वह क्या खाता-पीता है?"

मां ने कहा, "अपने लिए वह खुद भात पका लेता है।"

"क्या वह खुद खाना पकाता है?"

मां ने कहा, "वह एक समय खाना पकाता है और दोनों समय वही भात खा लेता है। मैं उसके पास पचास रुपये रख आई हूं।"

"और तुम जो मेरे लिए नारंगी और दूध खरीदकर ले आई हो, उसके लिए पैसे कहां से आए?"

मां ने कोई जवाब नहीं दिया।

ताऊ जी बोले, "बहू, मेरे सवाल का जवाब दो। बताओ, तुम्हें रुपये कहां से मिले?"

फिर भी मां ने कुछ भी कहना पसन्द नहीं किया।

ताऊ जी का शरीर कमजोर हो गया था। बातचीत करने में बड़ी तकलीफ हो रही थी। फिर भी वे बार-बार जिद करने लगे, "बताओ बहू···। मेरे खानदान की बहू होकर तुम्हें दूसरों के घरों में महरी का काम करना पड़ रहा है, यह मैंने सुना है। लेकिन एक साथ तुम्हें इतने रुपये कहां से मिले?"

मां ने कहा, "मेरे पास गहने-वहने तो कुछ थे नहीं। सिर्फ मेरे हाथ में

सोने का एक छोटा तावीज था। उसे ही बेचने पर साठ रुपये मिले थे। मैंने दस रुपये अपने पास रख लिए थे। उन्हीं रुपयों से मैं दूध और नारंगी खरीदकर लाई हूं।"

ताऊ जी ने सारी बातें चुपचाप सुनीं। कुछ देर तक दोनों में से किसी ने भी कुछ न कहा। थोड़ी देर बाद उनकी आंखों से टप-टप आंसू टपकने लगे।

मां ने धीरे-धीरे ताऊ जी के आंसू पोंछ दिए।

उसके बाद उसने कहा, "आप रो क्यों रहे हैं? इस तरह रोने से तो आपकी तबीयत और भी खराब हो जाएगी।"

"देखो बहू, मैं और ज्यादा दिनों तक जिन्दा रहता नहीं। लेकिन तुम्हें तो मालूम है कि यह छूत का रोग है। छूत का रोग होने की वजह से ही तुम्हारी जेठानी विनोद को साथ लेकर अपने [illegible] चली गई है। और तुम पराई होकर भी और यह छूत का रोग है [illegible] हुए भी मेरी इतनी सेवा कर रही हो। क्या तुम समझती [illegible] पाऊंगा?"

उसके बाद उन्होंने थोड़ा दम [illegible] उसके बाद उन्होंने पूछा, "तुम्हारे राजेन भइया तो वकील हैं न?"

मां ने कहा, "हां…।"

"कैसे आदमी हैं वे?"

"आदमी खूब बढ़िया हैं। [illegible] पढ़ाते हैं और एक पैसा भी नहीं लेते। [illegible] उनके मन में बहुत [illegible] और ममता है।"

ताऊ जी ने पूछा, "[illegible] मेरे पास ला सकोगी? [illegible]"

"किसलिए आप उन्हें बुलाना [illegible]?"

"मैंने कहा न कि [illegible] है। [illegible]"

छूत के रोगी के घर आएंगे ?"

मां ने कहा, "मैं एक बार कहकर देखूंगी।"

"तुम उनसे कहना कि जो कुछ भी फीस लगेगी, मैं दूंगा। मेरे मर जाने पर इस सम्पत्ति से वे अपना प्राप्य पा सकेंगे।"

मां ने कहा, "मैं उनसे कहूंगी।"

"तुम एक बार इसी समय चली जाओ। और ज्यादा देर मत करो। जाने के वक्त दरवाजे पर बाहर से ताला लगाती जाना। नहीं तो कुत्ते-बिल्ली और चोर-डकैत, कोई भी घर के भीतर घुस सकते हैं।"

मां ने कहा, "आप कहते हैं तो जा रही हूं।"

उसके बाद कुछ रुककर मां ने फिर कहा, "मैं जाऊंगी और तुरंत लौट आऊंगी। इस बीच आप उठकर बैठने की कोशिश मत कीजिएगा। राजेन भइया इस समय तक शायद कचहरी से लौट आए होंगे।"



हर रोज की तरह उस दिन भी राजू घर पर लैम्प जलाकर पढ़ने बैठा था। सुबह उसने खाना पकाकर रखा था। उसी में से थोड़ा-सा भात उसने रात को रख दिया था। उसकी फाइनल परीक्षा भी बिलकुल करीब थी। इस परीक्षा में यदि उसका अच्छा रिजल्ट हुआ तो जिस तरह स्कूल का नाम रोशन होगा, उसी तरह वह खुद भी बहुत-सी सुविधाएं पा सकेगा। उसे छात्रवृत्ति मिल सकती है, स्कूल की तरफ से पदक भी मिल सकता है। भविष्य में भी उसकी फीस माफ हो सकती है।

अचानक आंगन में किसी के चलने की आवाज सुनते ही उसने देखा कि मां आ रही थी। उसने पूछा, "मां, तुम ?"

मां ने कहा, "मैं तेरे राजेन मामा के पास जा रही थी। इसीलिए मैंने सोचा कि एक बार तुझे देख जाऊं। खाना-पीना ठीक चल रहा है न ? आज तूने क्या पकाया था ?"

राजू ने जवाब दिया, "भात"'। भात में ही एक आलू डाल दिया था। नमक-तेल देकर मैंने आलू का भुरता बना लिया और उसी के साथ भात खा लिया। और तुमने क्या खाया है मां ?"

"मैं ? मेरी बात छोड़ दे। तेरे ताऊ जी की हालत बहुत खराब है रे। उनकी देखभाल करते-करते मैं अपना खाना-पीना तक भूल गई हूं।"

राजू ने पूछा, "तो राजेन मामा के पास क्यों जा रही हो ?"

"तेरे ताऊजी ने उन्हें एक बार बुलाया है। मैं उन्हें बुलाकर ले जाने के लिए ही आई हूं। रास्ते में अचानक तेरी बात याद आ गई। इसी-लिए तुझे देखने के लिए मैं चली आई हूं।"

राजू ने कहा, "तुम एक बार ताई जी को खबर तो कर दो मां। ताई जी के आने पर तुम्हें थोड़ा आराम मिलेगा।"

मां ने कहा, "नहीं रे, जब तक तेरे ताऊ जी को यह बीमारी रहेगी, तब तक ताई जी इस घर में नहीं आएगी। यह रोग छुआछूत का रोग है न, इसीलिए।"

"लेकिन तुम ? तुम जो ताऊ जी को छूती हो। तुम्हें भी तो यह रोग हो सकता है।"

मा ने कहा, "सिर के ऊपर भगवान तो मौजूद है। उसी पर पूरा भरोसा है। और फिर मैं तो एक विधवा औरत हूं। मैं मर भी जाऊं तो क्या है ? जैसा मेरा जीना, वैसा मेरा मरना ! मेरे लिए जीना-मरना सब बराबर है।"

राजू ने कहा, "मा, तुम ऐसी बातें मत किया करो। ये बातें सुनकर मुझे बहुत तकलीफ होती है।"

मां ने कहा, "मेरी तरह तू भी भगवान पर भरोसा रखा कर। देखना, सब ठीक हो जाएगा।"

"मां, तुम कुछ खाओगी क्या ?"

"क्या खाऊंगी ? क्या घर में कुछ है भी ?"

राजू ने कहा, "मुड़ी है। मैं आज दुकान से मुड़ी खरीदकर लाया था। कुछ मैंने खा ली है और कुछ रख दी है कल के लिए। वह मुड़ी तुम्हें दूं क्या !"

मां ने कहा, "दे दे। कल तू फिर मुड़ी खरीद लेना ! तेरे पास रुपये तो हैं न ?"

"हां, तुम्हीं ने तो मेरे पास पचास रुपये रख दिए थे। उन रुपयों में से सिर्फ चार रुपये खर्च हुए हैं, बाकी रुपये बचे हुए हैं।"

मां ने कहा, "छोड़, मुड़ी देने की जरूरत नहीं। बल्कि तू अपने पास के रुपयों में से मुझे दस रुपये दे दे। मेरे पास जो दस रुपये थे, वे सभी खर्च हो गए हैं। मेरा हाथ अभी बिलकुल खाली है।"

राजू ने कहा, "मुड़ी की जगह मेरा पानी दिया हुआ भात है। वही खा लो।"

"तो फिर तू क्या खाएगा ?"

राजू ने कहा, "मेरे लिए तो बस एक रात की ही बात है। एक रात अगर न भी खाऊं, तो क्या होगा ? नहीं तो आज मुड़ी ही खाकर काम चला लूंगा।"

मां ने कहा, "तो फिर मुझे मुड़ी ही दे दे।"

राजू ने कांसे की एक तश्तरी में अपनी मां को मुड़ी दी।

मां ने कहा, "तश्तरी की मुड़ी मेरे आंचल में डाल दे। तेरी तश्तरी मैं छुऊंगी नहीं। दे, डाल दे आंचल में...। मैं मरूं या बचूं, यह बड़ी बात नहीं है। तेरे जिन्दा रहने से ही मेरी सारी साध पूरी हो जाएगी।"

राजू ने अपनी माँ के आंचल में मुड़ी डाल दी।

मा ने कई दिनों से कुछ भी नहीं खाया था। थोड़ी-सी मुड़ी खाकर उन्हें बड़ी तृप्ति अनुभव हुई।

उसके बाद उसने कहा, "अपने पास के रुपयों में से मुझे दस रुपये दे दे। अलग से देना…।"

राजू ने अलग से दस रुपये अपनी माँ के आंचल में डाल दिए। माँ ने रुपये आंचल की गांठ में बांध लिए। उसके बाद उसने कहा, "मैं जा रही हूं मुन्ने, तू होशियार रहना। चारों तरफ यही रोग फैल रहा है।"

यह कहकर आंगन पार कर माँ बाहर रास्ते पर चली गई।

□□

राजू के राजेन मामा यानी राजेन्द्रनाथ सरकार। वे खुद कभी गरीब थे, इसलिए आज इतने रुपये होने पर भी उन्होंने गरीबों के दुःख-दर्द को भुला नहीं दिया। कोर्ट-कचहरी और मुवक्किलों के बीच व्यस्त रहने के बावजूद समय निकाल ही वे दीन-दुखियों की मदद करते। इसी वजह से अगर वे किसी मुवक्किल को निहायत गरीब पाते तो वे बिना फीस लिए ही उसे मुकदमे में जिता देते। लेकिन खूब रुपये देने पर भी वे मजदूर के मालिकों का मुकदमा अपने हाथ में नहीं लेते। कहते—"उस समय मेरा कुछ ख्याल नहीं था, जब तुमने ऐसा अन्याय किया था? मैं तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं कर सकूंगा।"

और फिर राजू की माँ, जैसी असहाय महिला की विपत्ति में उनकी मदद करके वे खुश होते।

जब उन्होंने सुना कि राजू की ताई ने उन्हें घर

तब उन्होंने राजू की मां से कहा था, "तुमने घर क्यों छोड़ा राजू की मां ? उस समय क्या मुझे तुम एक बार बता नहीं सकती थी ? मैं उस समय कोर्ट में तुम्हारे जेठ के नाम एक मुकदमा ठोक देता।"

राजू की मां को वह बात अभी तक याद है।

राजेन भइया ने फिर कहा था, "तुम्हारा एक भी पैसा खर्च नहीं होगा। मैं खुद तुम्हारे जेठ को कोर्ट में खींच लाऊंगा और उसे नेस्त-नाबूद करके छोड़ दूंगा।"

राजू की मां ने कहा था, "आदमियों के कोर्ट में मैं कोई फरियाद करना नहीं चाहती राजेन भइया। भगवान के कोर्ट में एक दिन इसका ठीक-ठीक न्याय होगा ही।"

सो आज इतने दिनों के बाद भगवान के कोर्ट में ही इसका फैसला होने का दिन आ गया। अब राजू के ताऊ जी ने समझ लिया था कि अगर राजू की मां न आती, तो क्या होता ! मुंह में एक बूंद पानी तक डालने वाला कोई नहीं था।

राजेन्द्रनाथ सरकार उस तरह के एडवोकेटों में से थे, जो रुपयों के बजाय गरीबों के दुःख-दर्दों को ज्यादा मूल्य देते हैं।

उस दिन राजेन भइया को घेरकर बहुत-से मुवक्किल बैठे हुए थे। राजू की मां को देखते ही उन्होंने कहा, "क्या बात है राजू की मां ? तुम्हारी ऐसी हालत कैसे हो गई है ? कैसी सूरत बना रखी है तुमने ?"

राजू की मां ने कहा, "राजू के ताऊ जी की मरने की-सी हालत हो गई है। मैं ही इतने दिनों से उनकी सेवा-सुश्रूषा कर रही हूं।"

राजेन भइया ने कहा, "तुम्हारे राजू के मुंह से मैं सब कुछ सुन चुका हूं। सो तुमने तो यही चाहा था कि भगवान के कोर्ट में ही तुम्हारे जेठ जी के मुकदमे का फैसला हो, मनुष्यों के कोर्ट में नहीं।"

राजू की मां ने कहा, "नहीं भइया, अपनी समझ में तो मैंने कभी-किसी का बुरा चाहा नहीं। मैंने कभी नहीं चाहा कि किसी को ऐसा रोग हो जाए।"

"तो फिर तुम न तो आदमी के कोर्ट का न्याय चाहती हो और न फिर भगवान के कोर्ट का ही। तो फिर तुम आखिर चाहती क्या हो, यही बता दो।"

राजू की मां ने जवाब दिया, "मैं यही चाहती हूं कि मेरे जेठ जी स्वस्थ हो जाएं।"

"यह बात तो अच्छी ही है। मैं तो तुमसे यह नहीं कह रहा था। मैं तो यही कहना चाहता था कि पापी को उसके पाप की सज़ा मिलनी ही चाहिए।"

राजू की मां ने कहा, "मैं यह भी नहीं चाहती, भइया।"

"तो फिर तुम चाहती क्या हो?"

"मैं चाहती हू कि वे स्वस्थ हो जाएं। वे कितनी तकलीफ पा रहे हैं, यह आंखों से देखा नहीं जा सकता। इसीलिए मैं भगवान से प्रार्थना करती हू कि हे भगवान्, तू मेरे जेठ जी को क्षमा कर दे। न तो मैं किसी को पाप की सज़ा दिलवाना चाहती हू और न ही मैं चाहती हूं कि किसी मुकदमे का फैसला हो।"

राजेन भइया ने पूछा, "तो इस समय तुम मेरे पास क्यों आई हो?"

राजू की मां ने कहा, "राजू के ताऊ जी ने आपको बुलवाया है। आप मेहरबानी करके एक बार वहां चलिए। उन्होंने मुझसे बार-बार कहा है कि मैं आपको लेकर ही आऊं।"

राजेन भइया ने कहा, "मैं क्या उस चेचक के रोगी के घर पर जाऊंगा? आखिर क्यों? आखिर क्यों बुलाया है उन्होंने मुझे? पहले

यह तो बताओ।"

राजू की मां ने कहा, "उन्होंने यह तो मुझे बताया नहीं। ऐसा लगता है कि वे आपसे कुछ कहना चाहते हैं। आप वकील हैं। हो सकता कि वे अपनी आखिरी बात आपको बता जाना चाहते हों।"

राजेन भइया ने कहा, "मैं जा सकता हूं, लेकिन सिर्फ तुम्हारी बात रखने के लिए। तुम्हारा इसमें अगर कुछ भला हो, तो यही सोच-कर मैं जा सकता हूं।"

राजू की मां ने कहा, "मेरा और क्या भला होगा भइया? जिस दिन मैं विधवा हो गई, उसी दिन मैंने समझ लिया कि एक भगवान के सिवाय और कोई भी मेरा भला नहीं कर सकता है।"

राजेन भइया ने कहा, "भगवान तो खुद किसी का भला नहीं करता। वह किसी को भेज दिया करता है, जो आकर भला करके चला जाता है। चलो, चलें..."

दूसरे मुवक्किलों को बैठा छोड़कर राजेन भइया उठ खड़े हुए। उन्होंने कहा, "आप लोग थोड़ा इन्तजार कीजिए, मैं अभी लौट आता हूं।"

यह कहकर राजेन भइया मां के साथ चल पड़े।

२२

राजू की मां आगे-आगे चलने लगी और उसके पीछे-पीछे चलने लगे राजेन बाबू।

घर के पास आकर मां ने सदर दरवाजे का ताला खोला। फिर उन्होंने बत्ती जला दी। उसने कहा, "आइए राजेन भइया, भीतर

ग्राइए।"

जिस कमरे में राजू के ताऊ जी सोये हुए थे, उसकी बत्ती पहले
जल रही थी। राजू के ताऊ जी बिछौने पर बेसुध पड़े थे। किसी
ग्राने की ग्रावाज सुनकर वे ग्रपनी ग्रांखें मसने लगे।

राजू की मा ग्रपने जेठ जी के पास जाकर पुकारने लगी, "दे
भाई साहब, कौन ग्राए हैं। ग्रांखें खोलिए···।"

सामने राजेन बाबू को देखने पर ताऊ जी की ग्रांखों से ग्रांसू नि
लगे।

राजेन बाबू ने पूछा, "क्या हुग्रा है ग्रापको ?"

राजू के ताऊ जी कहने लगे, "मैं ग्रब ग्रौर बचूंगा नहीं राजेन ब
इसीलिए मैंने ग्रापको एक बार बुलवाया है।"

राजेन बाबू ने कहा, "मैं क्या कर सकता हूं ? ग्रब ग्राप भगवा
नाम लीजिए। यदि ग्रापको कोई बचा सकता है, तो भगवान ही
सकता है।"

राजू के ताऊ जी ने कहा, "ग्राप मुझे ग्राकर बचाएं, इसके
मैंने ग्रापको नहीं बुलवाया है राजेन बाबू। ग्राप सिर्फ मेरा कुछ इन्त
कर दीजिए। मैं एक वसीयतनामा तैयार करवाना चाहता हूं।"

"वसीयतनामा ?"

"हां, मैं ग्रब ग्रौर ज्यादा दिनों तक जिन्दा नहीं रहूंगा। मैं ग्र
सारी सम्पत्ति का वसीयतनामा तैयार करवाकर जाना चाहता हूं।
कुछ करना है, ग्राप कर डालिए राजेन बाबू। जरा जल्दी कीजिएगा
मेरे जाने का वक्त बहुत ही करीब ग्रा गया है···।"

"किसके नाम वसीयतनामा तैयार करना है ?"

राजू के ताऊ जी ने कहा, "राजू के नाम।"

राजेन बाबू ने कहा, "लेकिन राजू तो नाबालिग है।"

राजू के ताऊजी ने कहा, "राजू जब तक बालिग न हो जाए, तब तक उसकी विधवा मां अभिभावक की हैसियत से देखभाल करेगी। ज़रा जल्दी कीजिएगा राजेन बाबू। मेरी आयु अब और अधिक दिनों तक की नहीं है।"

राजेन बाबू ने पूछा, "और आपकी पत्नी और आपका नाबालिग लड़का।"

"उन्हें मैं कुछ भी नहीं दूंगा, राजेन बाबू। इतने दिनों से मैं उन्हें अपना समझता था। उन्हीं के कारण मैंने अपने छोटे भाई की स्त्री को और अपने भतीजे को इस घर से बाहर निकाल दिया था। क्या मेरे उन पापों का कोई प्रायश्चित हो सकता है?"

कहकर ताऊ जी फूट-फूट कर रोने लगे।

राजेन बाबू ने कहा, "आप रो क्यों रहे हैं?"

राजू के ताऊ जी ने कहा, "रोऊंगा नहीं क्या? क्या कह रहे हैं आप? मैं क्या पत्थर हूं कि मुझे रुलाई नहीं आएगी? मैं बीमार हूं तो क्या आप सोचते हैं कि मैं कुछ भी देख नहीं पा रहा हूं? मेरे छोटे भाई की विधवा स्त्री मेरी जो सेवा कर रही है, मैं वह नहीं देख पा रहा हूं क्या? और फिर आप ही उससे पूछिए न कि मैंने राजू के ऊपर और उसके ऊपर कितने अत्याचार किए हैं! जिनकी वजह से मैंने राजू और उसकी मां पर अत्याचार किए, वे ही मुझे छोड़कर चले गए हैं। और जिस पर मैंने अत्याचार किए हैं, वह मेरे लिए क्या नहीं कर रही है! मैं तो खुद अपनी आंखों से देख रहा हूं, राजेन बाबू। वह न तो रात में सो पाती है और न ही दिन में खाने-पीने का ठिकाना है। आदमी बहुत पुण्य करने पर रोग के समय इतनी सेवा-सुश्रूषा पाता है। पर मेरे जैसे पापी को इतनी सेवा क्योंकर मिल रही है?"

राजेन बाबू बोले, "तो फिर ठीक है। मैं उसी तरह कागज-पत्र तैयार

कर डालूंगा। लेकिन बाद में आप अपना विचार बदलेंगे तो नहीं ?"

"नहीं, हर्गिज नहीं। मैं अपना विचार बदलने वाला नहीं। अगर मेरी पत्नी भी मेरे पैर पकड़कर गिड़गिड़ाए, तो भी मैं अपना निर्णय नहीं बदलूंगा।"

राजेन भइया वहां और अधिक देर तक रुके नहीं। उन्होंने कहा, "तो फिर आपका नाम—ठिकाना मैं राजू की मां के पास से ले लूंगा। लेकिन बैंक में आपके कितने रुपये हैं, मुझे यह जानकारी भी चाहिए। और फिर इसके अलावा और कोई सम्पत्ति हो, तो मैं उसकी भी जानकारी हासिल करना चाहता हूं।"

राजू के ताऊ जी बोले, "और कहीं भी मेरा कोई मकान या ज़मीन-जायदाद नहीं है। मेरे जो कुछ भी थोड़े-से रुपये बैंक में जमा हैं, उन्हें भी मैं राजू के नाम कर जाना चाहता हूं। साफ-साफ लिख दीजिएगा। आप इस तरह वसीयतनामा तैयार कर दीजिए कि मेरे मरने के बाद राजू को सम्पत्ति मिलने में किसी तरह का गोलमाल न हो।"

राजेन भइया ने कहा, "ठीक है। लेकिन जब आपकी पत्नी लौटकर आएगी, तब मुझे बदनाम तो नहीं करेगी!"

राजू के ताऊ जी ने कहा, "उसके लिए कह दीजिएगा कि मैं ही ज़िम्मेवार हूं। कह दीजिएगा कि मैंने अपनी इच्छा से आपसे वसीयत-नामा तैयार करने के लिए कहा था। जितनी भी जल्दी हो सके, आप यह काम कर डालिए। मैं और ज्यादा दिनों तक जिन्दा रहने वाला नहीं हूं। आप तो मेरी हालत देख ही रहे हैं।"

राजेन भइया ने कहा, "तो फिर मैं अब चलता हूं।"

राजू के ताऊ जी ने कहा, "ठीक है, लेकिन मेहरबानी करके वसीयत-नामा जल्दी तैयार कीजिएगा। मैं अब और जिन्दा नहीं बचूंगा। जिन्दा रहने की अब कोई ख्वाहिश भी नहीं रही।"

भइया के घर से निकलने के साथ ही मां भी बाहर
होंने पीछे से पुकारा, "ओ राजेन भइया···।"
जन भइया रुक गए। उन्होंने कहा, "मुझे बुला रही हो राजू की

राजू की मां ने कहा, "मुझे बड़ा डर लग रहा है भइया।"

राजेन भइया ने पूछा, "क्यों? तुम्हें डर किस बात का है?"

राजू की मां ने कहा, "यदि वे घर-मकान, जमीन-जायदाद और -पैसे सब कुछ मेरे राजू के नाम कर जाएंगे तो फिर क्या होगा? जेठानी जी जब आएंगी, तब मैं उन्हें अपना मुंह भी कैसे दिखा ऊंगी?"

"क्यों, तुम्हें शर्मिन्दगी किस बात की होगी? तुम जोर-जबर्दस्ती जमीन-जायदाद तो हड़प नहीं रही हो। राजू के ताऊ जी अगर अपनी मर्ज़ी से तुम लोगों को सब कुछ दे जा रहे हैं, तो इसमें तुम्हें डरने की क्या ज़रूरत है?"

राजू की मां ने कहा, "लेकिन भगवान तो सब कुछ देख रहा है। मैं उसको क्या जवाब दूंगी?"

राजेन भइया ने कहा, "इसमें भला भगवान को क्यों खींच रही हो राजू की मां? तुम तो जानती ही हो कि भगवान जो कुछ भी करता है, वह सभी भले के लिए ही करता है।"

"लेकिन भइया, पूरा मकान तो हमारा अकेले का नहीं है। आधा मकान मिलने पर मैं भले ही ले सकती हूं।"

"देखो, मैं एक वकील हूं। वे जब अपनी मर्ज़ी से सब कुछ तुम लोगों को देकर जाना चाहते हैं तो कानून की नजर में सब पर तुम लोगों का हक हो जाएगा। समझ लो कि यही परम पिता परमेश्वर की इच्छा है। नहीं तो ठीक इसी समय तुम्हारी जेठानी जी अपने लड़के को सा

लेकर अपने मायके क्यों चली गई हैं ? विपत्ति के समय जो स्त्री अपने बीमार पति को छोड़कर अपने मायके चली आए उसे क्या मनुष्य कहा जा सकता है ? इस समय अगर तुम अपने जेठ जी की देख-भाल न करती तो उन्हें सियार या कुत्ते नोचकर खा जाते। या फिर वह भूखे-प्यासे सड़-सड़कर दम तोड़ देते। मरने के वक्त उन्हें जो कुछ सेवा-सुश्रूषा मिल रही है, वह भी उनके किसी पिछले पुण्य का फल है। इसमें तुम कोई आपत्ति मत करो।"

यह कहकर राजेन बाबू चले गए। उनके घर पर उस समय मुवक्किल बैठे हुए थे। और देर तक रुकना उनके लिए संभव नहीं था। जाते वक्त वे राजू की मां से कह गए, "तुम किसी दिन समय निकालकर शाम के वक्त मेरे पास आना। समझी ?"

राजेन बाबू के बाद राजू की मां को न जाने क्या सूझी कि वह खुद जेलेपाड़ा की तरफ चलने लगी।

जेलेपाड़ा मुहल्ले में उस समय हरेक घर में चूल्हा सुलगाया गया था चारों तरफ धुआं ही धुआं था। इतना ज्यादा धुआं कि राजू की मां की आंखें जलने लगीं। उसके बाद अपने घर के आंगन में आकर उसने देखा कि वहां भी धुआं भरा हुआ था। कुछ भी साफ दिखाई नहीं पड़ रहा था।

"राजू !"

घर के बरामदे में लालटेन जलाकर राजू पढ़ने बैठा था। अचानक मां को आया देखकर वह ताज्जुब में पड़ गया। उसने पूछा, "मां, तुम ? तुम इस समय कैसे आ गई ? ताऊ जी कैसे हैं ?"

राजू बरामदे से उठकर अपनी मां के पास चला आया था। मां ने कहा, "मेरे पास तू मत आ। मैं रोगी के पास से आई हूं। इस समय मुझे मत छूना।"

उसके बाद उसने पूछा, "तेरी पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है ?"

राजू ने जवाब दिया, "पढ़ाई ठीक ही चल रही है। जहां मैं समझ नहीं पाता हूं, उसे राजेन मामा के पास जाकर समझ लेता हूं।"

मां ने कहा, "देख मुन्ने, जरा मन लगाकर पढ़ाई किया कर। देख, ऐसा न हो कि मैं मुंह दिखाने लायक न रहूं।"

राजू ने कहा, "मां मैं तो पूरी कोशिश कर रहा हूं।"

"हाय राम, तेरी थाली-कटोरी सब तो जूठी ही पड़ी हुई है। क्या इन्हें तूने साफ नहीं किया ?"

राजू ने कहा, "पहले यह किताब पढ़कर समाप्त कर लूं। उसके बाद भात खाने के पहले बर्तन साफ कर लूंगा, तुम किसी बात की फिक्र मत करो।"

मां ने कहा, "उस घर में रहने पर भी हरदम तेरी ही बातें सोचती रहती हूं रे! लेकिन वहां तेरे ताऊ जी को उस हालत में छोड़कर आ भी नहीं सकती। क्या जाने कब बेचारे दुनिया से कूच कर जाएं, कौन कह सकता है ?"

उसके बाद कुछ रुककर मां ने फिर कहा, "तो फिर मैं जिस काम से यहां आई हूं, वही बताती हूं। क्या तू कल समय निकाल कर एक जगह जा सकेगा ?"

"कहां मां ?"

मां ने कहा, "विनोद की ननिहाल में···!"

"विनोद की ननिहाल में ?"

"हां···। विनोद की ननिहाल तो तू पहचानता है न ?"

राजू ने कहा, "हां, काफी दिनों पहले बचपन में मैं एक बार गया था। वही श्यामबाजार में ही तो ?"

"हां।"

मा ने कहा, "ताई जी के पास जाकर खबर दे देना कि ताऊ जी बीमार हैं। बीमारी बहुत बढ़ गई है। अगर आखिरी मुलाकात करने की इच्छा हो तो वे आ जाएं। मुझे उनकी हालत ठीक नहीं लग रही है।"

अपनी मा की बातें सुनकर राजू ने कहा, "वे सब नहीं आएंगे मा। फिर उन्हें झूठ-मूठ बुलाने से क्या फायदा?"

मा ने कहा, "देख बेटे, आखिरी समय सभी अपने लोगों को देखना चाहते हैं। वे लोग अपना कर्तव्य खुद करेंगे। लेकिन हमें तो अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए।"

राजू ने पूछा, "वे लोग अगर मुझे अपमानित कर भगा दें तो?"

"अगर भगा देंगे तो भगा देंगे, लेकिन बाद में अगर वे ताना मारेंगी कि इतनी बड़ी विपत्ति में तुमने एक बार खबर तक नहीं भेजी, तब क्या होगा? उस समय मैं क्या जवाब दूंगी? उस समय मैं क्या कैफियत पेश करूंगी?"

उसके बाद उसने फिर कहा, "और एक जरूरी बात है। तेरे ताऊजी अभी क्या कह रहे हैं, जानता है? वे कह रहे हैं कि वे घर-मकान, जमीन-जायदाद, रुपये-पैसे सब कुछ तेरे नाम कर जाएंगे। इसीलिए तो तेरे ताऊ जी ने राजेन मामा को बुलवाया था।"

राजू ने पूछा, "और विनोद? क्या ताऊ जी विनोद को कुछ नहीं दे जाएंगे?"

मा ने कहा, "नहीं। इसीलिए तो मैं तुझे उनके पास खबर देने के लिए भेज रही हूं। कल सुबह भात पकाकर तू श्यामबाजार चला जाना। उसके बाद लौटने पर तू भात खा लेना।"

राजू ने कहा, "लेकिन अगर ताऊजी सारी सम्पत्ति हमें देकर जाना चाहते हैं तो उन लोगों को इसकी खबर देने से क्या फायदा होगा? हम

लोग तो जोर-जबर्दस्ती ताऊ जी से सम्पत्ति अपने नाम लिखवा नहीं रहे हैं।"

मां ने कहा, "छिः, परायी सम्पत्ति का लालच नहीं करते। भगवान ने जिसको जो कुछ दिया है, उसी में सन्तुष्ट रहना उचित है। क्या यह बात तुझे बतलानी पड़ेगी ?"

"लेकिन अगर ताऊ जी सारी सम्पत्ति हमारे नाम लिख जाएं, तो क्या हम वह सम्पत्ति लेंगे नहीं ?"

मां ने कहा, "नहीं, हर्गिज नहीं लेंगे। ऐसा करने पर भगवान नाराज हो जाएगा।"

"लेकिन मेरे पिताजी का हिस्सा भी तो है उस मकान में। वह हिस्सा तो हम पाएंगे न ? वह हिस्सा तो हमें मिलना उचित है।"

मां ने कहा, "देख बेटे, बहस न कर। हर समय यह बात गांठ में बांधे रहा कर कि भगवान जो कुछ भी करता है, अच्छा ही करता है। उस घर से एक दिन उन्होंने हमें निकाल दिया था, तो क्या हम मामला-मुकदमा करने गए थे ? राजेन भइया ने तो कितनी ही बार मुकदमा ठोक देने की बात कही थी। लेकिन मैंने क्या राजेन भइया की बात मानी, जब कि इस मुकदमे में हमारा एक पैसा भी खर्च नहीं होता।"

मां की बात राजू ने जीवन में कभी भी काटी नहीं थी इसीलिए वह चुप रहा।

मां ने राजू को चुप देखकर कहा, "वे लोग अगर हमें उस घर से निकाल नहीं देते तो क्या तुम इतना कष्ट झेलने की आदत बना पाते ? कष्ट सहने पर ही कृष्ण मिलते हैं, यह जानते हो न ? कष्ट सहने के कारण ही प्रत्येक बार तुम इम्तहान में अव्वल आते हो। तुम जितनी ही तकलीफें उठाओगे, उतनी ही तकलीफ सहने की तुम्हारी क्षमता बढ़ेगी। विनोद की तरह मौज-मस्ती में अगर तुम रहते, तो तुम्हारी हालत भी

विनोद जैसी होती। इसीलिए तो भगवान दुःख-कष्ट देकर हमारी परीक्षा लिया करता है। भगवान देखता है कि दुःख के समय हम भगवान में अपना विश्वास कायम रख पाते हैं या नहीं। समझे ?"

राजू अपनी मां की सारी बातें चुपचाप सुनता रहा।

मा ने कहा, "मैं अब चलती हूं। तेरे ताऊ जी अकेले हैं। इतनी देर तक शायद वे मैले बिछौने पर पड़े कराह रहे होंगे और बार-बार मुझे पुकार रहे होंगे।"

राजू ने पूछा, "मां, और कितने दिनों तक तुम इस तरह खाए-पिए बिना चला पाओगी ?"

मा ने कहा, "जब तक भगवान की इच्छा होगी।"

"लेकिन तुम्हारा शरीर तो टूटा जा रहा है मां।"

मां और फिर रुकी नहीं। उसे बहुत-से काम करने हैं। दिन-भर में दसों बार उसे अपने जेठ जी का बिस्तर बदलना पड़ता है। जेठ जी के मैले कपड़ों को साबुन से साफ करना पड़ता है। भीगे कपड़ों को सुखाना पड़ता है। रोगी की सेवा करना क्या आसान काम है ! उसके बाद है उन्हें खिलाना। यह भी बड़ा टेढ़ा काम है। ताऊ जी किसी भी तरह खाना चाहेंगे ही नहीं। इस रोग में इलाज का कोई भारी खर्च नहीं है, यह बात सच है। फिर भी पथ्य तो करना ही पड़ता है। इसलिए रात में नींद आने पर भी बार-बार उठना पड़ता है। राजू के ताऊ जी सिर्फ पुकारते, "बहू, ओ बहू···!"

बहू झट-पट उठ बैठती और पूछती, "मुझे कुछ कह रहे हैं क्या ?"

राजू के ताऊ जी कहते, "कहा, मैंने तो तुम्हें कुछ भी नहीं कहा।"

सो हो सकता है। शायद राजू की मा ने कुछ भूल में सुना हो। या फिर वह सपना ही देख रही हो। एक बार फिर रोगी की चादर ठीक कर मां फर्श पर फिर से सोने की कोशिश करने लगती।

काफी दिनों पहले बचपन में राजू विनोद के मामा के घर गया था ! इतने दिनों के बाद फिर रास्ता देखते-पहचानते उस जगह जाना था। श्याम बाज़ार कोई नज़दीक तो है नहीं। घर के सामने पहुंचकर राजू पुकारने लगा, "विनोद, ओ विनोद...... !"

भीतर से किसी औरत की आवाज़ आई, "कौन है ? कौन विनोद को बुला रहा है ?"

राजू ने कहा, "मैं राजू हूं।"

साथ ही साथ सदर दरवाज़ा खुल गया। राजू ने देखा कि सामने ताई जी खड़ी थीं। राजू ने ताई जी के पैर छूकर उन्हें प्रणाम किया। और पूछा, "ताई जी, आप अच्छी तो हैं न ?"

"हां...। लेकिन तू यहां क्यों आया है ?"

इसी बीच घर के भीतर से विनोद भी बाहर आ गया। विनोद ने पूछा, "क्या है राजू, तू कब आया ?"

राजू ने जवाब दिया, "मां ने मुझे भेजा है। मां ने आपके लिए एक खबर भेजी है। ताऊ जी बेहद बीमार हैं। बीमारी काफी बढ़ चुकी है। लगता है कि ताऊ जी और ज़्यादा दिनों तक बच नहीं सकेंगे। मां ने आप लोगों को वहां एक बार चलने के लिए कहा है।"

"तेरी मां ? तेरी मां तो जेलेपाड़ा के मुहल्ले में रहती है न ? तुम लोगों को यह खबर कैसे मिली कि ताऊ जी बीमार हैं ?"

राजू ने कहा, "मुहल्ले के लोगों ने ही हमें खबर दी थी।"

विनोद की मां ने कहा, "तो क्या तेरी मां खुद एक बार जाकर तेरे ताऊ जी को नहीं देख सकती थी ? उसने बस तुझे मेरे पास खबर देने के लिए भेज दिया !"

राजू ने कहा, "मेरी मां ही तो पिछले पन्द्रह दिनों से ताऊ जी की सेवा-सुश्रूषा कर रही है।"

"तेरी मां ?"

"हां।"

"तेरी मां को हमने घर से निकाल दिया था। तो फिर उसने हमारे घर के भीतर कदम रखने की हिम्मत कैसे की ? उस घर के भीतर जाने की इजाजत किसने दी है, जरा मुझे भी तो पता चले।"

राजू ने कहा, "इजाजत कौन देता ? मुहल्ले के लोगों से खबर पाकर मां खुद वहां गई थी। वह जो वहां गई, उसके बाद से वहीं रह गई है।"

"मां वहीं रह गई है ? तुम लोग आखिर किसके हुक्म से उस घर के भीतर गए हो, यह तो बताओ ? वह घर तुम लोगों का है या हमारा ? हमारे घर में घुसने का तुम लोगों को हुक्म किसने दिया है ?"

राजू ने कहा, "मैं तो आप लोगों के घर के भीतर गया नहीं।"

"तो फिर तू कहां रहता है ?"

"मैं तो अपनी जेलेपाड़ा वाली झोंपड़ी में ही रहता हूं।"

"और तेरी मां ?"

मां तो दिन-रात नाऊ जी के घर पर ही रहती है। रात-दिन जाग-जागकर नाऊ जी की सेवा कर रही है। नाऊ जी का परिश्रम ज्यादा हो गया है। इसीलिए मां ने आप लोगों को बुलवाया है।"

माई जी ने कहा, "तेरी मां वहीं रहती है न ? तो फिर देखना, तेरी मां को भी वह रोग हो जाएगा। तब जाकर उसे पता चलेगा। बेकार के लोगों के पास भला क्या कोई जाता है ? क्या किसी को ऐसे आदमी के नजदीक जाना चाहिए ? यह रोग छूत का रोग है।"

राजू ने कहा, "लेकिन मां क्या करती ? अगर मां नहीं जाती तो नाऊ जी की देखभाल कौन करता ?"

माई जी ने कहा, "मैं समझ गई हूं। मैं सब कुछ समझ गई हूं कि

तेरी मां का मतलब क्या है ? उसने सोचा है कि इस विपत्ति के समय वह अपने जेठ जी से सारी सम्पत्ति अपने नाम लिखवा लेगी। मैं यह होने नहीं दूंगी। जाकर अपनी मां से कह देना कि उसके मंसूबे पूरे होने वाले नहीं। मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगी। तेरी मां अगर तेरे ताऊ जी से सारी सम्पत्ति अपने नाम लिखवा भी ले तो भी मैं देख लूंगी। मैं भी कोर्ट-कचहरी में जाना जानती हूं।"

राजू ने कहा, "इसीलिए मैं कह रहा हूं कि आप एक दिन ताऊ जी को देखने के लिए चलिए। और फिर अगर जमीन-जायदाद पाने के लिए ही मां ताऊ जी की सेवा कर रही होती, तो वह मुझे आपके पास भेजती ही क्यों ?"

विनोद ने कहा, "मां, पिताजी बहुत बीमार हैं। तुम एक बार बादामतल्ला चलो न !"

ताई जी ने विनोद को बुरी तरह डांटा और कहा, "तू जरा रुक भी। तुझे बड़प्पन दिखाने की कोई जरूरत नहीं। हर बात में तू अपनी टांग क्यों अड़ाता है, बोल तो ? मैं जो कुछ ठीक समझूंगी, वही करूंगी।"

राजू ने पूछा, "तो क्या आप जाएंगी नहीं ?"

ताई जी ने कहा, "मैं जाऊंगी या नहीं, यह मैं देखूंगी। वह मेरा घर है, मेरी गृहस्थी है—वहां तेरी मां क्यों गई है, पहले इस बात का जवाब दे।"

राजू ने कहा, "मैं तो आपके घर में पैर रखने गया नहीं। मेरी मां ने आपके घर के भीतर कदम ज़रूर रखा है। मां के मामले में आप मुझे क्यों डांट रही हैं ? मैं चलता हूं। मुझे जो कुछ कहना था, कह चुका हूं। अब आप जो कुछ उचित समझें, वही करें।"

इसी समय एक बूढ़े सज्जन वहां आ धमके। उन्होंने पूछा, "क्या हुआ है रे ? इतनी चीख-पुकार क्यों मचाई जा रही है ?"

ताई जी ने सारी बातें बताईं। वे बूढ़े सज्जन शायद ताई जी के पिताजी थे।

उन्होंने कहा, "देखो, ऐसे वक्त तुम लोगों का यहां आना ठीक नहीं हुआ। अब अगर जमीन-जायदाद हाथ से निकल गई तो? जवाई बाबू अगर तेरे ऊपर नाराज होकर सारी जमीन-जायदाद तेरी देवरानी के नाम लिख दें तो? फिर क्या होगा?"

"जमीन-जायदाद क्या ऐसे ही हाथ से निकल जाएगी? तमाशा है क्या? क्या कोर्ट-कचहरी नहीं है? कानून नाम की कोई चीज नहीं है क्या?"

उस सज्जन ने कहा, "देखो, आखिरी समय में तुम्हारा वहां मौजूद रहना उचित है। तेरी देवरानी बड़ी चालाक औरत है। हो सकता है कि वह सब कुछ अपने नाम लिखवा ले। कुछ भी कहा नहीं जा सकता। धन-सम्पत्ति के लिए आदमी कुछ भी कर सकता है!"

ताई जी ने कहा, "बाबू जी, लेकिन आप तो समझ नहीं रहे हैं। उस रोग के रोगी के पास रहना क्या ठीक है? अगर मुझे भी छूत का यह रोग हो गया तो? और विनोद को ही यदि यह रोग हो गया तो फिर क्या होगा?"

"तो तुम चेचक का टीका लगवाकर चली जाओ!"

ताई जी ने कहा, "चेचक का टीका लगवाने के बावजूद भी कितनी ही बार चेचक निकल आता है। मैंने खुद बहुतों को देखा है……।"

इसके बाद राजू फिर वहां और रुका नहीं। ताई जी को खबर देनी थी, सो वह खबर दे चुका था। बस उसका काम खत्म!

राजू ने घर लौटने के लिए फिर बड़े रास्ते की तरफ अपने कदम बढ़ाए।

पास बस से उतरते ही मानो किसी ने पुकारा, "ओ राजू... !"

राजू ने पीछे मुड़कर देखा। वहां नन्दू खड़ा था। नन्दू ने पूछा, "क्या हां गया था तू ?"

राजू ने जवाब दिया, "श्यामबाजार गया था, विनोद के मामा के ...!"

"कौन विनोद ?"

राजू ने जवाब दिया, "मेरे ताऊ जी का लड़का विनोद! पिछली बार वह फेल हो गया था। इस समय वह हम लोगों से एक क्लास नीचे पढ़ रहा है।"

नन्दू ने पूछा, "पढ़ाई कैसी चल रही है ?"

राजू ने कहा, "पढ़ाई ठीक नहीं हो पा रही है। घर पर मा नहीं हैं न! खुद ही खाना पकाना पड़ता है और बर्तन भी मांजने पड़ते हैं। और फिर बाज़ार से सौदा लाना, कपड़े धोना, घर में झाड़ू देना—ये सभी काम मुझ अकेले को ही करने पड़ते हैं। मां के रहते पर मा ही सारे काम किया करती थी और मैं अपनी पढ़ाई में लगा रहता था।"

"क्यों, कहां गई तेरी मा ?"

राजू ने कहा, "ताऊ जी बहुत बीमार हैं। इसलिए उनकी देखभाल करने के लिए मा हम लोगों के पुराने घर पर ही रहती है। मैं अकेला जोड़ाबागान की बस्ती में अपने घर पर रहता हूं। खैर..., तू कहां जा रहा है ?"

नन्दू ने कहा, "हम लोग सभी सिनेमा देखने जाएंगे। इसीलिए टिक खरीदने के लिए लाइन में खड़ा होना पड़ेगा। क्या तू जाएगा ?"

राजू ने कहा, "नहीं भाई, मेरी मा नाराज होगी।"

"अरे भाई, तुझे तो टिकट के पैसे देने नहीं पड़ेंगे। खूब बढ़िया पिक लगी है। नाच-गाना और मार-धाड़ से भरी हुई पिक्चर है। चल न...

राजू बोला, "नहीं भाई"। मैंने कहा न कि मां नाराज होगी।"

"अरे मा को पता ही कैसे चलेगा? तेरी मा तो तेरे ताऊ जी के घर पर है।"

राजू ने जवाब दिया, "पता नहीं चलने मे क्या हुआ? मैंने मा को वचन दिया है कि मैं दिन-भर पढ़ाई-लिखाई करता रहूंगा।"

"अरे हम लोग तो साढ़े छह बजे तक घर लौट आएंगे। मा को अगर पता चल भी जाए तो कह देना कि फुटबॉल खेलने के लिए मैदान चला गया था।"

राजू ने कहा, "तो फिर यह तो झूठ बोलना होगा। मा के सामने मैंने प्रतिज्ञा की है कि मैं कभी भी झूठ नहीं बोलूंगा। मा ने कहा है कि झूठ बोलने के बराबर कोई पाप नहीं है।"

"तेरी मा तो पुराने जमाने की औरत है, इसीलिए वह ऐसा कहा करती है। आजकल तो सभी झूठ बोलते हैं। मुझे ही देख ले। मैं तो अक्सर झूठ बोलता हू। बता तो, इसमें मेरा क्या बिगड़ गया है?"

राजू ने कहा, "देख भाई, तुम लोग बड़े आदमी हो। तुम लोगों की बात ही अलग है। हम लोग तो तुम्हारी तरह बड़े आदमी हैं नहीं। हमारा सच बोलना ही ठीक है। इसी मे भगवान खुश रहता है। भगवान खुश होने पर हमारी भलाई करेगा। मा कहा करती है कि जिनका कोई नहीं है, उनका भगवान है।"

नन्दू ने कहा, "देख रहा हू कि तेरी 'भगवान-भगवान' की रूट अभी तक मिटी नहीं है। मैं तेरे भगवान को नहीं मानता। इससे भला मेरा क्या बिगड़ गया है?"

राजू ने कहा, "नहीं भाई"'। मा ने कहा है कि भगवान के बारे मे बहस करना ठीक नहीं। किताबों मे भी यही लिखा है।"

नन्दू उसके बाद और रुका नहीं। उसे सिनेमा की टिकट के लिए

लाइन में जाकर खड़ा होना था। आखिरकार अगर टिकट नहीं मिली तो। नन्दू चला गया…।

राजू धीरे-धीरे ताऊ जी के घर की तरफ बढ़ने लगा। सुबह का उसका सारा समय बर्बाद हो गया था। अब तक वह काफी पढ़ाई कर सकता था। लेकिन पढ़ाई की कितनी भी बर्बादी क्यों न हो, मां की बात वह टाल नहीं सकता था।

ताऊ जी के घर के सामने आकर उसने सदर दरवाज़े का कड़ा बजाना शुरू किया। उसने पुकारा, "मां, ओ मां…!"

भीतर से आकर मां ने दरवाजा खोल दिया। उसने पूछा, "क्या रे, क्या हुआ? श्यामबाजार गया था क्या?"

राजू ने जवाब दिया, "हां, वहीं से सीधा यहां आ रहा हूं।"

"क्या ताई जी से मुलाकात हुई?"

"हां, तुमने जो कुछ कहने के लिए कहा था, मैंने कह दिया। लेकिन ताई जी ने कहा है कि छुआछूत के रोग के रोगी के पास जाना ठीक नहीं। रोग ठीक हो जाने पर वे आएंगी।"

मां ने कहा, "तुमने यह क्यों नहीं कह दिया कि ताऊ जी और ज्यादा दिनों तक बचने वाले नहीं। आखिरी समय एक बार मुलाकात कर लेनी चाहिए…!"

राजू ने कहा, "मैंने यह भी कह दिया था। तुमने जो कुछ कहने के लिए कहा था, मैंने सब कुछ कह दिया। ताई जी के पिताजी ने भी उनको यहां चले आने के लिए बहुत समझाया। लेकिन ताई जी ने किसी की भी बात नहीं मानी।"

मां बोली, "ठीक है…। अगर वे न आएं तो भला मैं क्या करूंगी और तू ही क्या करेगा! हमलोगों का फर्ज़ था खबर देने का, सो हमने खबर दे दी। अब जैसी उन लोगों की मर्ज़ी!"

उनके बाद उसने कहा, "तू अब घर चला जा। खाना-वाना तो कुछ खाया नहीं तूने···। तेरा आज कोई भी काम नहीं हुआ। पढ़ाई-लिखाई भी आज हो नहीं पाई, जब कि परीक्षा इतनी नजदीक है।"

राजू ने पूछा, "रात में एक बार घर आओगी, मां ?"

"क्यों रे ? शायद अकेले-अकेले तुझे अच्छा नहीं लग रहा है न ?"

"अकेले अच्छा क्या लगेगा भला ? हमेशा तुम्हारे साथ सोने की आदत हो गई है। अगर तुम आओगी तो मैं तुम्हारे लिए भी भात पका-कर तैयार रख दूंगा। तुम पांच मिनट में खा-पीकर फिर लौट आना।"

मां ने कहा, "मैं नहीं आ सकूंगी रे। तेरे ताऊ जी की हालत आज बहुत बिगड़ गई है। मैं पांच मिनट के लिए भी नहीं आ सकूंगी। इसी-लिए तो मैंने तुझे ताई जी को बुला लाने के लिए कहा था।"

राजू और क्या करता ! वह फिर जेलेपाड़ा की तरफ कदम बढ़ाने लगा।



"बहू···!" बुदबुदाते हुए राजू के ताऊ जी ने पुकारा।

राजू की मां को शायद झपकी आ गई थी। अपने जेठ जी की आवाज सुनते ही वह हड़बड़ाकर उठ बैठी। उसने पूछा, "प्यास लग गई क्या ? थोड़ा पानी दूं···?"

राजू के ताऊ जी ने पूछा, "तुमने तो राजू को श्यामबाज़ार भेजा था। क्या उन लोगों ने कोई खबर भेजी है ?"

राजू की मां को कुछ न सूझा कि वह क्या जवाब दे !

ताऊ जी ने फिर पूछा, "यह क्या, तुम कुछ भी बोल नहीं रही हो ?

ग राज़ी-खुशी हैं न ?"
राजू की मां बोलीं, "हां, राजू को मैंने भेजा था। वहां सभी अच्छी
ए ही हैं।"
"हां, वे सब भले-चंगे ही रहें ! इसीलिए तो वे लोग मुझे छोड़कर
ले गए हैं। मैं मरूं या बचूं, इससे उनका कुछ बनता-बिगड़ता नहीं।
ख़ैर, जाने दो। भगवान उन्हें खुश रखे...।"
इसी समय दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ सुनाई पड़ी।
राजू के ताऊ जी ने कहा, "ओह, शायद वे लोग आ गए हैं। एक बार
देखो तो कौन है !"
दरवाज़ा खोलने पर मां ने राजेन भइया को देखा। राजेन भइ
कचहरी से सीधे चले आए थे। उन्होंने पूछा, "क्या खबर है ? तुम्
जेठ जी की तबीयत आज कैसी है ?"
राजू की मां ने कहा, "आइए भइया। सोच रही थी कि शायद आज
की रात भी ये नहीं निकाल पाएंगे।"
राजेन भइया ने कहा, "उनका वसीयतनामा बिलकुल तैयार करके
ले आया हूं। क्या वे अपने हाथ से वसीयतनामा लिख पाएंगे ? अगर ऐसा
हो सके, तो अच्छा होगा। नहीं तो आखिर में इसे लेकर तुम्हारी जेठानी
जी मामला-मुकदमा कर सकती हैं।"
"लेकिन वे तो अपने हाथों से लिख नहीं पाएंगे। इतनी ताकत उनके
शरीर में नहीं है।"
"चलो, भीतर चलें। देखें, वे क्या कहते हैं।"
घर के भीतर जाकर राजेन भइया सीधे वहीं गए, जहां ताऊ
सोए हुए थे। उन्होंने पूछा, "इस समय आपकी तबीयत कैसी है ?"
राजू के ताऊ जी ने पूछा, "मेरे वसीयतनामे का आपने क्या किय
"उसी का मसविदा तैयार करके ले आया हूं। अपने आप हाथ

लिख पाएंगे क्या ? ज्यादा बड़ा नहीं है। आप अगर इसे अपने हाथ से लिख पाएं, तो बहुत बढ़िया होगा। तो फिर इसे लेकर कोई मामला-मुकदमा नहीं कर सकेगा। आखिरकार अगर आपकी पत्नी लौटकर राजू की मां पर मुकदमा करे तो ?"

राजू के ताऊ जी बोले, "मैं लिख सकूंगा। लाइए, मैं कोशिश करता हूं।"

यह कहकर उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

"पहले आप सुन लीजिए कि मैंने क्या लिखा है !" यह कहकर राजेन बाबू ने मसूदा मसविदा पढ़कर सुनाया।

सीधी-सीधी बातें थी, संक्षेप में। पढ़कर सुनाने में ज्यादा समय नहीं लगा। उसमें लिखा था, "मैं अपनी सारी चल-अचल सम्पत्ति खूब सोच-समझकर अपनी मर्जी से अपने स्वर्गवासी भाई के नाबालिग पुत्र राजू के नाम लिख रहा हूं। जब तक वह नाबालिग रहेगा, तब तक उसकी मां उसकी सम्पत्ति की देखभाल करेगी।"

राजेन भइया ने ताऊजी को एक सादा कागज दिया। फिर उन्होंने उन्हें अपनी कलम भी दी। ताऊजी ने काफी तकलीफ उठाकर वे सारी बातें कागज पर लिख दीं और अपना दस्तखत कर दिया। उसके बाद उन्होंने कहा, "इसे रजिस्ट्री करने में जो भी खर्च लगेगा, वह राजू की मां आपको दे जाएगी राजेन बाबू। मैं तो इस समय उठ नहीं सकता। आप मेहरबानी करके अपने पास से ही रुपये खर्च करके रजिस्ट्री करवा दीजिएगा। आपके रुपये मैं अपनी घड़ी बिकवाकर दे दूंगा। आप कुछ फिक्र नहीं कीजिएगा। सोच लीजिएगा कि एक दरिद्र आदमी पर आपने उपकार किया है।"

राजेन बाबू ने कागज-कलम वापिस लेकर कहा, "सो आपको ऐसी हालत में यह सब सोचना नहीं चाहिए।"

बैंक और पोस्ट-ऑफिस में मेरे जो रुपये जमा हैं, उनकी पासबुक तुम्हारी जेठानी अपने साथ ले गई है। उसके वापिस आने की कोई उम्मीद करना बेकार है।"

यह कहकर ताऊजी हाँफने लगे।

राजू की माँ ने कहा, "आप ये सब बातें क्यों सोच रहे हैं? जो कुछ करना होगा, मैं करूँगी। आप इस समय थोड़ा डाब का पानी पी लीजिए।"

राजू के ताऊ जी ने कहा, "अब डाब का पानी? थोड़ी देर पहले ही तो तुमने नारंगी का रस दिया था। तुम क्यों मुझे यह सब खिलाने-पिलाने की कोशिश किया करती हो?"

राजू की माँ बोली, "मैं तो आपके लिए कुछ भी नहीं कर पा रही हूँ।"

"तो छोड़ो भी…। मेरे लिए तो श्मशान में लकड़ियाँ तैयार रखी हैं। आखिर मेरे लिए तुम इतना खर्च क्यों कर रही हो?"

राजू की माँ चम्मच से डाब का पानी ताऊ जी के मुँह में डालने लगी, परन्तु डाब का पानी कण्ठ के नीचे फिर उतरा नहीं। डाब का पानी गालों के ऊपर से बहकर नीचे गिरने लगा।

उसके बाद एकबारगी एक गहरी खामोशी छा गई…।



उस समय रात काफी हो चुकी थी। राजू खाना खाकर किताब लेकर बैठा था। उसके बाद जब उसे नींद आने लगी, तो वह बिस्तर पर जाकर लेट गया। हठात् अपनी माँ की आवाज सुनकर वह चौंक उठा।

"अरे राजू...। राजू, ओ राजू...।"

झट-पट राजू बिछौने से उठ पड़ा। दरवाजा खोलते ही उसने देखा कि बाहर मां खड़ी थी।

"अरे राजू, तेरे ताऊजी का शरीर शान्त हो गया है।"

राजू चौंक उठा। उसने कहा, "तो फिर ?"

"अभी तो उन्हें श्मशान ले जाना होगा। तेरे पास कुछ रुपये-पैसे हैं कि नहीं ? इस समय तो रुपयों की ज़रूरत पड़ेगी।"

राजू ने कहा, "लेकिन इतनी रात में उन्हें कौन श्मशान ले जाएगा ? मुझ अकेले से तो होगा नहीं। कम से कम और तीन आदमी तो चाहिए ही। इस समय क्या कोई चलने के लिए तैयार होगा ?"

राजू की मां ने कहा, "अब जो तेरी मर्ज़ी हो, वही कर। इस समय मुझे कुछ भी नहीं सूझ रहा है। मैं चलती हूं।"

यह कहकर मां चली गई।

राजू ने कह तो दिया, लेकिन वह वहां रुका नहीं। दरवाजे पर ताला लगाकर वह भी बाहर निकल पड़ा। इस समय सब के सिर पर परीक्षा सवार थी। ऐसे समय में अपनी पढ़ाई-लिखाई छोड़कर भला कौन, किसी चेचक के रोगी को श्मशान ले जाने के लिए तैयार होगा ? किसके पास इतना फालतू समय है ? इन्हीं ताऊजी ने उन्हें कितनी तकलीफें दी हैं। लेकिन ये सब बातें इस समय राजू को याद नहीं आ रही थीं। ताऊजी की मौत हो गई थी, उनका अन्तिम संस्कार तो करना ही होगा। इस समय घृणा, आक्रोश या क्रोध कुछ भी करना उचित नहीं। मां ने कहा है कि सिर के ऊपर भगवान तो है। वही सब कुछ देख रहा है। उसके पास आदमी के पाप-पुण्य का सारा लेखा-जोखा लिखा हुआ है। उसके हिसाब में भूल-चूक नहीं होती। वही आखिरकार हम लोगों का फैसला करेगा। हम लोगों को चाहिए कि हम आदमी के साथ

अच्छा व्यवहार करें। आदमी के भीतर जो भगवान है, उसके प्रति श्रद्धा रखें…।

हम लोगों के दोस्त सरोज का घर सबसे नजदीक था। सबसे पहले राजू उसी के घर पर गया।

काफी पुकारने के बाद सरोज की नींद टूटी। उसने बाहर आकर पूछा, "राजू तुम? इतनी रात में आए हो…! आखिर बात क्या है रे?"

राजू ने कहा, "मेरे ताऊ जी की मौत हो गई है भाई। श्मशान चलने के लिए तुझे बुलाने आया हूं। तू चल सकेगा क्या?"

सरोज ने कहा, "तेरे ताऊजी गुजर गए क्या? चलो, अच्छा ही हुआ। तेरे ताऊ जी ने तुम लोगों को जिस तरह तकलीफें दी थी, उसी तरह उन्हें फल भी मिल गया।"

राजू ने कहा, "दुर्, किसी आदमी के मर जाने के बाद उसके बारे में इस तरह की बातें नहीं करते। और फिर ताऊजी तो मेरे गुरुजन थे। गुरुजनों के बारे में ऐसी बात कहना ठीक नहीं।"

"खाक गुरुजन थे वे! गुरुजन होने पर तो गुरुजन की भांति उन्हें व्यवहार करना चाहिए था। तुम लोगों के साथ क्या तुम्हारे ताऊ जी ने गुरुजनों जैसा व्यवहार किया था? ताऊ जी मर गए, चलो पिण्ड छूटा।"

राजू ने कहा, "भाई, ऐसी बातें मत करो। गुरुजनों की निन्दा नहीं करनी चाहिए। मेरी मां ने कहा है कि गुरुजनों के प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए।"

सरोज बोला, "उनकी बातें छोड़ो। उस चेचक के रोगी की लाश को लेकर मैं श्मशान में जाऊं, मेरी बला से! मैं नहीं जा सकूंगा। तुम और किसी को ढूंढ लो।"

राजू निराश होकर लौट आया। उसके बाद वह रमेश के घर पर गया। रमेश ने भी इंकार कर दिया। उसने कहा, "भाई, मैं श्मशान नहीं जा पाऊंगा। मैंने बाबा तारकेश्वर का एक तावीज़ पहना है। इस अवस्था में श्मशान जाना मना है।"

राजू वहां से भी लौट आया। अब वह कहां जाए ! उसे नन्दू की याद आई।

नन्दू ने सारी बातें सुनने के बाद कहा, "तो फिर तूने ठीक ही कहा था। सचमुच भगवान है तो सही। ताऊ जी ने जिस तरह तुम लोगों को घर से खदेड़ दिया था, उस तरह उन्हें सज़ा भी मिल गई है। बूढ़ा जब मर ही गया है, तब तेरे लिए उचित है कि तू काली-मन्दिर में जाकर प्रसाद चढ़ा कर आए।"

राजू बोला, "नहीं भाई, वे मेरे अपने ताऊ जी हैं। उन्हें लेकर मुझे श्मशान जाना ही पड़ेगा।"

"लेकिन तेरे ताऊ जी का लड़का विनोद कहां गया? उसे खबर दे आ न। उसीका तो बाप है, उसे तो सबसे पहले श्मशान तक जाना चाहिए।"

राजू बोला, "भाई, विनोद नहीं आएगा। उसकी मां ने मना कर दिया है।"

नन्दू ने कहा, "ताऊ जी का अपना लडका ही नहीं जाएगा तो फिर हम क्यों जाएंगे? तेरे ताऊ जी के हम क्या लगते हैं? हम लोग तो पराए हैं।"

राजू उसके बाद और कहीं भी नहीं गया। वह ताऊ जी के घर लौट आया।

उसने बाहर से पुकारा, "मां!"

मां उस समय ताऊ जी की लाश के पास बैठी थी। राजू की

आवाज सुनकर वह बाहर आई। उसने पूछा, "यह क्या, और लोग कहां हैं ?"

राजू ने जवाब दिया, "मां, कोई भी आने के लिए राजी नहीं हुआ।"

मा ने पूछा, "तो फिर क्या होगा ?"

राजू ने कहा, "सब ने कहा है कि विनोद को बुला लो।"

मा ने कहा, "विनोद क्या आएगा भला ? अगर वह आना चाहे, तो भी उसकी मा उसे आने नहीं देगी।"

राजू ने कहा, "तो फिर मैं श्मशान के पास से खटिया खरीदकर लाता हूं। और पैसे देकर कुछ आदमी भी जुटा लूगा। पैसों के लोभ में बहुत-से आदमी आ जाएंगे।"

"तो फिर ऐसा ही करो। मेरे पास तेरे ताऊ जी की घड़ी बेचने से मिले रुपये हैं। उन रुपयों में से बीस रुपये दे रही हूं, ले जा।"

आखिरकार वही किया गया। बादामतल्ला से श्मशान अधिक दूर नहीं है। श्मशान के पास ही खटिया मिलती है। वहां भिखारियों का अड्डा है। वे लोग पैसे पाने के लोभ में चले आए। सिर्फ उन्हें पैसे ही नहीं देने पड़े, आलूदम और परौंठे भी खिलाने पड़े।

लेकिन आखिर में बीस रुपयों में काम नहीं निपट सका। सब मिलाकर चालीस रुपये खर्च हो गए। भिखारियों के साथ राजू ने भी कंधा दिया। जब ताऊ जी की लाश चिता पर रख दी गई, उस समय राजू की आंखें डबडबा आई थीं। ताऊ जी के अपने पुत्र के होते हुए भी उसे ही मुखाग्नि देनी पड़ी। फिर तो उसकी आंखों में आंसू रुक न सके। सारा क्रिया-कर्म राजू को ही करना पड़ा।

लेकिन ताई जी तक खबर कौन पहुंचाएगा ?

मा ने कहा, "तू ही चला जा बेटा। तू श्यामबाजार जाकर ताई जी को खबर दे आ। नहीं तो आखिरकार दीदी कहेंगी कि आदमी

या और मैंने उन्हें खबर तक नहीं दी ।"
जू को सारी रात जागना पड़ा था । सुबह श्मशान जाकर बाकी
रे कर वह लौटा था । उसी हालत में खाली पैर, खाली बदन
यामबाज़ार की तरफ चल पड़ा, ताईजी को यह खबर देने के लिए ।

□□

राजेन भइया को भी सवेरे खबर मिली ।

खुद राजू की मां उन्हें खबर देने गई थी । उसने कहा, "अब मैं क्या करूं भइया ? मेरी जेठानी जी और उनका लड़का, कोई भी तो नहीं आया । मैं भला उस घर को छोड़कर अपने घर कैसे आऊंगी ?"

राजेन भइया बोले, "तुम वह घर क्यों छोड़ दोगी ? जेलेपाड़ा वाले घर के लिए बीस रुपये भाड़ा देने की क्या जरूरत है ? तुम्हें तो मैं तुम्हारे जेठ जी का रजिस्ट्री किया हुआ वसीयतनामा दे चुका हूं । अब तो वह मकान तुम्हारा और तुम्हारे राजू का है । तुम उसी मकान में रहोगी । यदि वे लोग तुम्हारे जेठ जी के मरने की खबर पाकर आएं तो भी तुम उस मकान में अपना दखल मत छोड़ना । कहना इस मकान – तुम लोगों का कोई हक नहीं है । यह मकान हम लोगों का है···।"

"क्या ऐसा करना ठीक होगा भइया ?"

"ठीक क्यों नहीं होगा ? तुम्हारे जेठ जी मकान तुम लोगों के नाम
लिख गए हैं । उन्होंने अपने हाथों वसीयतनामा लिखा है और अपने हाथ
से दस्तखत भी किया है । कोर्ट में वसीयतनामे की रजिस्ट्री भी हो चु
है । तुम भला अपनी जेठानी जी की बात क्यों सुनोगी ?"

"यदि वे कहें कि मैंने जोर-जबर्दस्ती अपने जेठ जी से लिख

लिया है, तब ?"

राजेन भइया बोले, "तब तो फिर मैं हूं ही। उस समय जो कुछ करना होगा, मैं करूंगा। मुख्य बात यह है कि तुम मकान से अपना दखल मत छोड़ना। और फिर उसके बाद भी यदि वे जबर्दस्ती तुमसे मकान छुड़वा दें तो मुझे खबर देना। फिर कोर्ट-कचहरी में जो कुछ करना होगा, मैं करूंगा। उसके लिए तुम्हें किसी तरह की फिक्र करने की जरूरत नहीं।"

राजू की मा बोली, "नहीं भइया, मैं यह सब नहीं कर सकूंगी। चाहे जान भले ही चली जाए, पर यह सब मुझ से नहीं होगा।"

राजेन भइया ने कहा, "तो फिर सम्पत्ति तुम्हारे हाथों से निकल जाएगी, यह कहे देता हूं।"

"सम्पत्ति हाथ से निकल जाती है तो निकल जाए! सम्पत्ति के जाने पर कोई हर्ज नहीं। लेकिन आप सिर्फ यही आशीर्वाद दीजिए कि हमारा राजू पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बन सके। इतने दिनों तक वह आप ही की वजह से फर्स्ट आता रहा है। इस बार उसकी आखिरी परीक्षा है। इस परीक्षा में भी, देखिए, वह फर्स्ट हो।"

"उसकी परीक्षा कब शुरू होगी ?"

"परसों से ही।"

राजेन भइया ने कहा, "इस बार भी तुम्हारा लड़का फर्स्ट आएगा, देख लेना। वह बड़ा तेज लड़का है, उसे ज्यादा समझाने की जरूरत नहीं पड़ती। एक बार समझा देने पर ही वह अपना पाठ समझ लेता है।"

राजू की मा ने कहा, "मैं रात-दिन भगवान से यही विनती करती हूं भइया कि मुझे न तो रुपये-पैसे चाहिएं और न ही जमीन-जायदाद, तुम सिर्फ मेरे राजू को लायक आदमी बनाना। रुपये-पैसे और

जमीन-जायदाद बहुत देख चुकी हूं, इस ज़िन्दगी में। यह सब चीज़ें जैसे आती हैं, वैसे ही चली भी जाती हैं। कितने ही लोग मेरी नज़रों के सामने ही रातों-रात बड़े आदमी बन गए और फिर रातों-रात ही वे फकीर भी हो गए। आखिर में उन्हें घोर दुर्दशा झेलते हुए मर जाना पड़ा। मरने पर उनके अन्तिम संस्कार का खर्च भी नहीं जुट सका, यह भी मैंने देखा है। उन सब चीज़ों पर मेरा कभी लोभ नहीं रहा। राजू के पिताजी कचहरी में मामूली-सा काम करते थे। लेकिन उन्होंने अपने जीवन में कभी भी घूस नहीं ली। वे कहा करते थे, 'मैं जहां काम करता हूं, वहां खूब घूस मिल सकती है। लेकिन राजू की बात सोचकर, राजू के भविष्य की बात सोचकर घूस नहीं ले सकता। सिर्फ यही सोचता हूं कि मेरे पाप का फल कहीं राजू को न भुगतना पड़े।"

राजेन भइया बोले, "सो तुम जो कुछ ठीक समझो, वही करो। वसीयतनामा तुम्हें सौंप देना मेरा कर्त्तव्य था। वह कर्त्तव्य मैंने पूरा किया। अब जो कुछ तुम ठीक समझो, वही करो।"

□□

राजू को फिर तो दिन और रात का होश नहीं था। सिर्फ पढ़ाई और पढ़ाई...। पढ़ाई के सिवाय उसे और कोई भी चिन्ता नहीं थी। कितनी ही बार वह खाना भी नहीं पकाता। राजू की मां ताऊजी के घर के सदर दरवाज़े पर ताला लगाकर राजू के पास चली आई थी। अपने लड़के को अकेला छोड़कर वह कितने दिनों तक अपने जेठ जी के मकान में पड़ी रहती !

राजू की मां ने पहले-पहल सोचा था कि उसके जेठजी की मौत की

खबर सुनकर उसकी जेठानी जी अपने लड़के के साथ श्यामबाज़ार छोड़कर बादामतल्ला चली आएंगी। लेकिन सारे दिन इन्तज़ार करने पर भी जब वे लोग नहीं आए, तब वह सीधी जेनेपाड़ा बस्ती के अपने घर में चली आई।

मां को देखकर राजू हैरान रह गया। उसने पूछा, "मां, तुम वहां क्यों आई हो? वह मकान तो अब हम लोगों का है।"

मां ने कहा, "छिः छिः, ऐसी बातें नहीं करते। वह मकान अब भी तुम्हारी ताई जी का है।"

राजू ने कहा, "लेकिन राजेन मामा ने तो मेरे नाम पर उस मकान का वसीयतनामा तैयार कर दिया है!"

मां ने कहा, "छिः, ऐसी बातें नहीं सोचनी चाहिएं। इस तरह लालच करना ठीक नहीं।"

"लेकिन लालच की बात क्यों कह रही हो मां? जब ताऊ जी वह मकान मुझे दे गए हैं तो कानून के मुताबिक हम लोग ही उस मकान के अधिकारी हैं।"

मां ने कहा, "देख बेटे, सरकार के कानून से बढ़कर भी और एक कानून है। वह है भगवान का कानून···! भगवान का कानून सबसे बड़ा है। ताऊ जी ने गुस्से में आकर मकान हमारे नाम पर लिख दिया है। इसलिए हम लोगों के लिए उस मकान पर अपना हक समझना ठीक नहीं।"

"तो फिर तुमने जो इतने दिनों तक बिना कुछ खाये-पिये ताऊजी की सेवा की, क्या उसका कोई मोल नहीं? उस समय तो विनोद या विनोद की मां, कोई एक बार भी देखने के लिए नहीं आया। तो क्या हम लोग हमेशा-हमेशा के लिए इस गन्दी बस्ती में इस पुवाल के छप्पर के नीचे ही पड़े रहेंगे?"

मां ने कहा, "भला कौन कह सकता है ? भगवान की कृपा होने पर भी एक दिन सुख मिलेगा। उस समय तुझे भी फिर इस तरह तक- नहीं उठानी होगी। भगवान जिस पर कृपा करता है, पहले उसकी क्षा लेता है। यह बात जानते हो न ?"

बात पूरी हुई भी नहीं थी कि इसी बीच विनोद का हाथ थामे ताई ी वहां आ पहुंचीं।

अपनी जेठानी जी को देखते ही मां रोने लगी। उसने कहा, "बहन, आपने बड़ी देर कर दी। और दो दिन पहले अगर आप आ जातीं, तो राजू के ताऊ जी को बड़ी शान्ति मिलती ! वे आप लोगों को देखकर जा पाते।"

ताई जी ने कहा, "इन सब दिखावटी बातों को रहने दो। मैं तुमने पूछ रही हूं कि तुम मेरे मकान पर ताला कैसे लगा आई ? क्या तुमने समझ लिया कि हम लोग कभी लौटकर आएंगे ही नहीं ?"

मां ने कहा, "हाय राम, आप कैसी बातें कर रही हैं ? घर खुला रहने पर तो उसमें चोर-डकैत घुस जाते, इसीलिए मैंने ताला लगा दिया है।"

"मेरे घर पर ताला लगाने का अधिकार तुम्हें कहां से मिल गया है, ज़रा मैं भी तो सुनूं ! वह क्या तुम्हारा मकान है कि तुमने उसपर ताला लगा दिया ?"

इस बार राजू अपने-आपको रोक नहीं पाया। उसने कहा, "हां वह मकान तो अब हमारा है। ताऊ जी वह मकान मेरे नाम लिख ग हैं।"

"तू चुप रह तो! मरते हुए आदमी के हाथ से ज़ोर-जबर्दस्ती वसीय नामा तैयार करवा लिया गया है। क्या तुम सोचते हो कि मुझे इ खबर नहीं है ? मैं वहां बैठी-बैठी सारी खबर पा रही थी।"

"मैं कहती हूँ कि मकान की चाबी मुझे दे," उसके बाद राजू की मा की ओर देखते हुए ताई जी ने कहा, "दो। जल्दी दो...।"

राजू को गुस्सा आ गया। कहा, "आप मा पर क्यों झूठ-मूठ नाराज हो रही हैं ? मैंने जब आपको श्यामबाजार जाकर ताऊ जी की बीमारी की खबर दी, तब क्या आपने यहा आने की तकलीफ की ? मां थी, इसी वजह से ताऊ जी को मरने के पहले थोड़ी सेवा मिल सकी।"

ताई जी ने कहा, "अरे तू तो बड़ा मिजाज दिखा रहा है ! एक तमाचा दूंगी, तब पता चलेगा।"

यह कहकर ताई जी सब्र नहीं रख सकीं। उन्होंने आगे बढ़कर राजू के गाल पर एक तमाचा मारा।

राजू की मा ने झट-पट अपने लड़के को अपने पास खींच लिया और उसे अपने दोनों हाथों से जकड़ कर पकड़ लिया। मा ने कहा, "छि, क्या गुरुजनों के साथ ऐसी बातें करनी चाहिए ?"

ताई जी ने कहा, "जैसी मा है, वैसा ही लड़का है। मा के पास से उसे जैसी शिक्षा मिली है, वैसा ही तो वह बनेगा।"

राजू ने मा से कहा, "लेकिन ताई जी ने मुझे क्यों मारा ? मैंने क्या कसूर किया है ?"

मा ने राजू को धीरज बधाया। कहा, "छि, गुरुजनों से ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए। जरा देख तो, भला विनोद ने क्या मुझे कुछ भी कहा है ?"

ताई जी ने मां की बातें अनसुनी करते हुए कहा, "कहां है मेरे घर की चाबी ? लाओ, मुझे चाबी दे-दो।"

मा ने तुरत अपने आंचल से चाबी खोलकर, अपनी जेठानी जी को सौंप दी।

राजू एक ओर चुपचाप खड़ा था। उसने कहा, "मां, तुमने चाबी

दे-दी ?"

ताई जी ने अपने आंचल में चावी वांधते-बांधते कहा, "देगी नहीं तो करेगी क्या ? क्या अपने पास रख लेगी ? क्या अपने पास चावी रख लेने का हक है, तेरी मां का ! ओह, इतना घमंड ?"

यह कहकर ताई जी विनोद के साथ चली गई ।

राजू ने कहा, "मां !"

मां खोई-खोई सी उस समय भी एकटक अपनी जेठानी के जाने की राह की तरफ देख रही थी ।

राजू ने कहा, "मां, तुम कुछ भी वोल क्यों नहीं रही हो ? कुछ वोलो तो सही ! तुमने आखिर चावी क्यों दी ? उस घर से एक दिन उन लोगों ने हमें धक्का देकर निकाल दिया था, क्या यह तुम्हें याद नहीं ? वोलो न मां, तुम सब कुछ भूल गई क्या ?"

हठात् मां राजू को अपनी छाती से लगाकर रोने लगी । मां की आंखों से निकले आंसू टप-टप करके राजू के माथे पर गिरने लगे ।

मां ने रोते-रोते कहा, "भूल कैसे सकती हूं वेटा ? मुझे सब कुछ याद है, सब कुछ याद है···। लेकिन···!"

"लेकिन क्या ?"

मां ने उसी तरह रोते-रोते कहा, "मैं अगर भूल भी जाऊं, तो भगवान को सब कुछ याद रहेगा । जिस दिन तू वड़ा होकर अपने पैसों से मकान बनवाएगा, उसी दिन के लिए मैं जिन्दा हूं वेटे । उसी दिन के इन्तजार में मैं इस समय का सारा अपमान भूली हुई हूं । मेरी उस आस को पूरा नहीं करेगा वेटे ?"

राजू ने कहा, "तुम तो सिर्फ भगवान-भगवान रटती रहती हो । यदि सचमुच भगवान होता तो क्या हम लोगों को आज इतनी तकलीफें उठानी पड़तीं ? भगवान तो कुछ भी देख नहीं पाता है ! यदि भगवान देख

पाता तो हम लोग भी सुख से रहते। आज उस पक्के मकान में जाकर रहते।"

मां ने कहा, "इस तरह लालच मत करो। इस तरह लालच करना ठीक नहीं। अपनी कोशिशों से तुम बड़े बनोगे और अपनी कोशिशों से ही पक्का मकान बनवाओगे। शायद भगवान की यही मर्जी है। इसीलिए शायद हमें ताऊजी वाला मकान छोड़कर भागा आना पड़ा है। भगवान जो कुछ करता है, हमारी भलाई के लिए ही करता है। क्या यह तुम्हें मालूम नहीं?"

राजू ने कहा, "सिर्फ तुम ही भगवान-भगवान की रट लगाती रहती हो। और कोई तो इस तरह भगवान के नाम की माला नहीं जपता। मेरे दोस्त इसीलिए मुझे कितना चिढ़ाते हैं, क्या तुम जानती हो?"

मां ने कहा, "वे चिढ़ाते हैं तो चिढ़ाएं। इसके लिए बेटे तुम कभी भी बुरा मत मानना। तुम सिर्फ मन लगाकर अपनी पढ़ाई पूरी करते जाओ।"

राजू ने कहा, "मैं तो मन लगाकर ही पढ़ रहा हूं।"

"हां, इसी तरह मन लगाकर पढ़ते रहो। इसी से भगवान तुम पर प्रसन्न होगा।"

राजू के पास और बातें करने का समय नहीं था। वह अपनी किताब कापियां लेकर पढ़ने बैठ गया।

□□

उस समय राजू की परीक्षा चल रही थी। उसकी मां ने फिर अपनी पुरानी जगहों में बर्तन मांजने का काम शुरू कर दिया था। अगले दिन काम

करके वापिस लौटते ही वह अपने लड़के के इन्तजार में बरामदे में बैठी रहती। राजू के आते ही वह उठ खड़ी होती। पूछती, "बेटे, आज परीक्षा कैसी हुई है ? अच्छी तो हुई है ?"

राजू कहता, "क्या जाने मां !"

"सारे सवालों का जवाब तुमने लिखा तो है ना ?"

राजू कहता, "हां, मां।"

मां कहती, "मैं भगवान से रोज़ प्रार्थना करती हूं कि हे भगवन्, मेरा राजू अच्छी तरह परीक्षा में पास हो जाए। मेरा राजू मेरा नाम ऊंचा कर सके !"

प्रत्येक दिन राजू परीक्षा देने जाता और घर लौटते ही फिर वही सवाल उससे पूछा जाता, "आज परीक्षा कैसी हुई है मुन्ने ? अच्छी न।"

□□

उस दिन कचहरी से लौटते समय रास्ते में राजेन भइया से राजू की मां की मुलाकात हो गई।

राजेन भइया ने कहा, "यह क्या राजू की मां, तुमने अपनी जेठानी जी को उस घर की चाबी दे दी है ?"

राजू की मां ने कहा, "हां, भइया।"

"तुमने चाबी क्यों दे दी ? वह मकान तो अब तुम लोगों का है। वह मकान तो तुम्हारे जेठ जी तुम्हारे राजू के नाम लिख गए हैं।"

"छोड़िए भी भइया···। भगवान तो सब कुछ देख रहा है।"

राजेन भइया ने कहा, "लेकिन अगर वसीयतनामे की बात छोड़ भी

दें, तो भी कम से कम मकान के आधे भाग पर तुम लोगों का अधिकार है। उस आधे भाग पर तुम अपना हक क्यों छोड़ रही हो?"

"उसे भी भगवान देख रहा है।"

राजेन भइया ने कहा, "भगवान सब कुछ देख रहा है, मानता हूं। लेकिन फिर कोर्ट-कचहरी और वकील-बैरिस्टर क्यों [illegible] हैं? तुम कुछ भी फिक्र मत करो। मैं उन लोगों पर तुम्हारी [illegible] मुकदमा ठोक देता हूं।"

राजू की मां ने कहा, "जो आप ठीक समझें, वही करें। मैं ठहरी एक असहाय औरत। भला मैं क्या बोलूंगी?"

राजेन भइया ने कहा, "ठीक है, तुम्हें कुछ भी करना नहीं होगा। जो कुछ करना है, मैं ही करूंगा।"

राजेन भइया ने उसके बाद क्या किया, पता नहीं। एक दिन विनोद के घर पर कोर्ट से एक समन आया।

विनोद की मां समन देखते ही [illegible] हो गई। वे तुरन्त ही अपने पिताजी के पास इलाहाबाद चली गई।

विनोद के नाना जी बूढ़े आदमी थे। उन्होंने [illegible] में अपनी जिन्दगी में काफी नाम कमाया था। उन्होंने कितने ही मुकदमे किए थे। [illegible]

उन्होंने कहा, "यह तो मुकदमे का समन है। [illegible] की मां—तुम्हारे मकान पर [illegible]"

विनोद की मां ने पूछा, "तो फिर क्या होगा पिताजी? [illegible]"

पिताजी बोले, "[illegible]

तुम्हें उनके पास रहना चाहिए था! तुम्हारी देवरानी ने शायद सारी सम्पत्ति अपने नाम लिखवा ली है! उसे ही सारी सम्पत्ति मिलेगी।"

□□

उसके बाद कुछ रुककर उन्होंने फिर कहा, "देखता हूं कि मैं क्या कर पाता हूं!"

यह कहकर वे दौड़े-दौड़े वकील के घर पर परामर्श करने के लिए चले गए।

उसके बाद कोर्ट में मुकदमा शुरू हुआ।

राजू की ताई जी ने एक दिन राजू की मां को अपने पास बुलवाया। राजू की मां के आते ही उन्होंने पूछा, "क्यों बहू, आखिर तुमने मेरे ऊपर मुकदमा कर ही दिया? तुम क्या मुझे घर छुड़वाकर रास्ते पर बिठाना चाहती हो? तुम्हारा मिजाज क्या इतना बढ़ गया है क्या?"

राजू की मां ने कहा, "बहन, यदि मेरा मिज़ाज बढ़ गया होता, तो क्या मैं आपके बुलाने पर यहां आती?"

"तो फिर तुमने मुकदमा क्यों किया?"

"मुकदमे के बारे में मैं कुछ भी नहीं जानती बहन। जो कुछ किया है, वह मेरे राजेन भइया ने ही किया है। मैं इसके बारे में कुछ भी नहीं जानती।"

"अच्छा बताओ तो, राजू के ताऊ जी राजू के नाम, क्या वसीयतनामा कर गए हैं? उस वसीयतनामे में क्या लिखा है?"

"वे अपनी सारी सम्पत्ति राजू के नाम लिख गए हैं।"

"शायद तुमने उनसे जबर्दस्ती सारी सम्पत्ति राजू के नाम लिखवा ली है!"

राजू की मां बोली, "बहन, मैं क्यों जबर्दस्ती लिखवा लेती? वे खुद ही अपने हाथों से सब कुछ लिख गए हैं। राजेन भइया को बुलवाकर उन्होंने अपने हाथों से लिखा है। मैंने उन्हें बहुत मना किया, फिर भी वे माने नहीं।"

विनोद की मां ने कहा, "ये सब झूठी बातें हैं!"

राजू की मां ने कहा, "मैं भगवान की कसम खाकर कहती हूं कि मैंने जो कुछ भी कहा है, सच कहा है। मैंने जरा भी झूठ नहीं कहा, ना ही कुछ बढ़ा-चढ़ा कर आप को बताया है।"

"तो फिर क्या चाहती हो? क्या तुम मुझसे घर छुड़वाओगी? क्या तुम मुझे दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर कर दोगी?"

राजू की मां ने कहा, "दीदी, आप ऐसी बातें क्यों कर रही हैं? मैंने तो ऐसा सपने में भी कभी नहीं सोचा। बरन् बात तो उल्टी ही···।"

"उल्टी बात कैसी?"

"एक दिन तो आपने ही मुझसे घर छुड़वा दिया और मुझे रास्ते की भिखारिन बना दिया! आप तो अपनी आंखों से देख आई हैं कि मैं किस तरह गरीबों के मुहल्ले में कितनी तकलीफें उठाकर अपने लड़के के साथ रह रही हूं। दूसरे के घरों में महरी का काम करके, मुझे अपने लड़के का पालन-पोषण करना पड़ रहा है।"

"तो फिर तू मुकदमा उठा ले न!"

राजू की मां बोली, "किन्तु राजेन भइया मुकदमा उठाने के लिए मना कर रहे हैं!"

विनोद की मां ने कहा, "मैं सब कुछ समझ रही हूं। आज हम

पराये हो गए हैं और जाने कहां के राजेन भइया, तेरे लिए अपने आदमी बन गए हैं !"

"लेकिन आप गुस्सा क्यों कर रही हैं ?"

"गुस्सा नहीं आएगा क्या ? तुमने सारी लाज-शरम को ताक पर रखकर, अपनी विधवा जेठानी पर मुकदमा कर दिया। सारे मुहल्ले के लोग तुम्हारे ऊपर हंस रहे हैं।"

राजू की मां ने कहा, "जिस दिन आप लोगों ने हमें अलग कर दिया था, मुझे अपने लड़के के साथ बाहर निकाल दिया था, उस दिन मुहल्ले का कोई भी आदमी मुझपर नहीं हंसा था। वरन् आप पर ही लोग थू-थू कर रहे थे ! उस दिन की बात शायद आपको याद नहीं। वह बात याद रखने की है भी नहीं ! वह बात किसी को भी याद न रहे ! जिस दिन मेरे जेठ जी को बीमार छोड़कर आप अपने मायके चली गई थीं, उस दिन भी कोई मुझपर नहीं हंसा था। वरन् सभी ने आपकी ऐसी कारस्तानी देखकर आप ही की निन्दा की थी।"

विनोद की मां ने कहा, "मेरे बाप का घर था, इसीलिए मैं गई थी। मैं तो और किसी का खाने-पहनने गई नहीं। तो फिर किसने मेरी निन्दा की और किसने बड़ाई, इस बात से मेरा क्या आता-जाता है ?"

राजू की मां ने कहा, "मुहल्ले के लोगों की बात का ज़िक्र तो मैंने शुरु नहीं किया है। आपने ही वह बात उठाई, इसीलिए मुझे कहना पड़ा।"

"मां !"

हठात् राजू की आवाज सुनकर मां चौंक पड़ी। राजू कब अचानक चुपचाप घर में घुस आया था, इसकी किसी को भी खबर तक नहीं थी।

मां ने पूछा, "क्यों राजू, तू कब आया ? क्या तेरी परीक्षा ख़त्म हो गई ?"

"हा, मा ! घर पर तुम्हें न पाकर मैंने समझ लिया कि तुम यहां आई हो।"

राजू की मां ने कहा, "चल, घर चल। तुझे खाना देती हूं···।"

यह कहकर राजू की मां चलने लगी। ताई जी ने पीछे से पूछा, "तो फिर तुम मुकदमा वापस नहीं लोगी ?"

राजू की मां ने कहा, "राजेन भइया यदि मुकदमा उठा लेने को कहें, तो मैं मुकदमा उठा लूंगी।"

"और राजू के ताऊ जी का वसीयतनामा ?"

"वह भी मेरे पास पड़ा है।"

ताई जी ने कहा, "अच्छा, ठीक है। देखूंगी कि मैं क्या कर पाती हूं!"

अगर उस दिन राजू वहां न पहुंचा होता तो शायद बात काफी बढ़ जाती। लेकिन अच्छा ही हुआ। राजू की आखिरी परीक्षा थी। वह सबेरे थोड़ा-सा भात खाकर गया था, इस समय उसे जोरों की भूख लग रही थी। इसलिए मां वहां फिर और रुक नहीं पाई।

मां ने राजू से पूछा, "हां रे, आज कैसी परीक्षा हुई ? ठीक तो हुई है ?"

राजू ने कहा, "क्या जाने मां, कैसी हुई है !"

"लेकिन उस दिन तो राजेन भइया कह रहे थे कि तेरी परीक्षा खूब बढ़िया जा रही है।"

राजू ने कहा, "राजेन मामा प्रश्न-पत्र हाथ में लेकर मुझसे पूछने लगे कि मैंने क्या-क्या उत्तर लिखा है और मैं बताता गया। उसके बाद राजेन मामा ने बताया कि मैंने बिलकुल सही उत्तर लिखा है।"

"तो फिर तुझे सन्देह किस बात का हो रहा है ?"

राजू ने जवाब दिया, "जब तक रिज़ल्ट नहीं निकल जाता, तब तक क्या कहा जा सकता है ?"

यह कहकर वह मां के साथ-साथ चलने लगा।

मां ने कहा, "तेरा रिज़ल्ट निकलने दे···। मैं काली-मंदिर में प्रसाद चढ़ाकर आऊंगी। देख बेटा, मैं मुंह दिखाने लायक बची रहूं! मुहल्ले के लोगों के बीच मेरा सम्मान बचा रहे!"



परीक्षा समाप्त हो जाने के बाद हम लोगों में से, बहुत-से लड़के बाहर घूमने चले गए। लौटने पर मैंने सुना कि राजू स्कूल में फर्स्ट आया था। सिर्फ यही नहीं, सरकार की तरफ से अच्छे छात्रों को जो छात्रवृत्ति मिलती है, वह भी राजू को मिली है।

यह खबर सुनकर नन्दू ने कहा, "राजू तो छुपा रुस्तम निकला भाई। फोकट में फर्स्ट मार गया है···"

हम लोगों ने पूछा, "ऐसा क्यों कह रहे हो ?"

नन्दू ने कहा, "फोकट में न कहूं तो और क्या कहूं ? 'भगवान-भगवान' रट कर उसने ठीक अपना काम निकाल लिया।"

पहले हम लोग राजू के बारे में आपस में बातें कर आनन्द उठाया करते थे। पर उस दिन हम हंस नहीं सके। हमें ऐसा महसूस हुआ कि राजू ही ठीक कहा करता था और हम लोग जो कुछ कहते थे, वह गलत था।"

उसके बाद हम लोगों की आपस में मुलाकातें ज्यादा नहीं हुईं। जिसे जिस कॉलेज में दाखिला मिला, उसी में वह भर्ती हो गया। लेकिन राजू था छात्रवृत्ति पाने वाला लड़का। सरकार की तरफ से उसे प्रति माह पचहत्तर रुपये मिलते। कॉलेज में उसे फीस भी नहीं देनी पड़ती। वह

बिना किसी कोशिश-पैरवी के प्रेसिडेन्सी कॉलेज में दाखिला पा गया।

और उसके बाद जब मैं और भी बड़ा हुआ, तब फिर किसी के साथ भी कोई सम्पर्क नही रहा। हम लोग सभी जीवन-संग्राम मे लड़ते हुए घायल हुए जा रहे थे। नौकरी की कोशिश करते थे, पर नौकरी मिलती नहीं थी। दफ्तरों की खाक छानते फिरते थे हम। बाढ के पानी में पड़े तिनको की भांति हम लोग भी कहा बहे जा रहे थे, उसका कुछ अता-पता भी हमे नही था।



इस तरह कितने ही दिन बीत गए, इसका कुछ ख्याल नहीं। राजू जिस बस्ती में रहता था, उसे उजाड़कर, वहां एक पन्द्रह-तल्ला बिल्डिंग बनवाई गई थी। यह मैंने खुद देखा था।

इसी बीच मैं पटना की सड़क पर पैदल चला जा रहा था कि अचानक मैंने देखा कि एक गाड़ी मेरे पास आकर रुक गई। और उस गाड़ी मे से एक आदमी बाहर निकलकर मुझसे बोला, "अरे, तुम यहा कैसे ?"

पहले-पहल मैं पहचान नही पाया। मैं अचकचा गया। मन मे सन्देह हुआ—यह कही राजू तो नही है!

राजू ने मुझे दोनों हाथो से पकड लिया।

राजू ने पूछा, "यहा तुम क्या कर रहे हो ?"

मैंने कहा, "मैं एक कन्ट्रैक्टर के पास नौकरी कर रहा हूं। यहां एक ड्रेन तैयार हो रही है, उसे ही देखने आया हूं। आज रात की गाड़ी मे ही मैं लौट जाऊंगा। और तुम कहां हो ?"

राजू ने कहा, "मेरी बदली कलकत्ता से पटना हो गई है। मैं यहां

एजुकेशन सेक्रेटरी हूं। आई० ए० एस० की परीक्षा पास करके अब धीरे-धीरे मैं इस पद पर पहुंच गया हूं।"

मेरी तो मानो बोलती ही बन्द हो गई। कुछ देर तक एकटक मैं राजू की तरफ देखता रहा। उसके बाद मैंने राजू से कहा, "तुमने सचमुच हम सबका नाम रोशन किया है। अच्छा, बताओ तो, यह सब कैसे संभव हुआ?"

राजू ने कहा, "सब भगवान की कृपा से ही संभव हुआ है।"

मैंने देखा कि राजू ठीक पहले-जैसा ही था। सिर्फ उसकी वेश-भूषा बदली थी।

राजू हमारे दूसरे साथियों के बारे में पूछने लगा।

मैंने कहा, "भाई राजू, किसी से भी अब मुलाकात ही नहीं होती। कौन कहां छिटक कर जा पड़ा है, पता नहीं।"

कुछ रुककर मैंने फिर पूछा, "अच्छा राजू, आखिरकार तुम्हारी ताई जी वाले मुकदमे का क्या नतीजा निकला?"

राजू ने जवाब दिया, "ताऊ जी के वसीयतनामे को मां ने ताई जी के सामने ही फाड़ कर फेंक दिया। घर का अपना हिस्सा भी मां ने ताई जी के नाम लिख दिया। मुझे उस समय नेशनल स्कालरशिप मिल चुकी थी। फिर हमें रुपयों की वैसी तंगी नहीं रह गई थी।"

"और तुम्हारी ताई जी?"

राजू ने कहा, "ताई जी इस समय बड़ी तकलीफ में हैं। इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट ने ताऊ जी का मकान तुड़वा दिया और वहां रास्ता बना दिया। मुआवज़े के रूप में जो रुपये मिले, उससे एक घर किराए पर लेकर ताई जी विनोद के साथ रहने लगीं। लेकिन विनोद वे सारे रुपये खा गया। उसके बाद एक दिन शादी करके न जाने वह कहां गायब हो गया।"

"तो फिर तुम्हारी ताई जी का अब गुज़ारा कैसे होता है?"

राजू ने कहा, "मैं हर महीने ताई जी के पास दो सौ रुपये भेजता हूं। उन्हीं रुपयों से वे किसी तरह अपना काम चलाती हैं। ताऊ जी तो पहले ही जा चुके थे और फिर विनोद ने भी उनकी देख-भाल नहीं की। उनकी देख-भाल करने के लिए उनके पास कोई नहीं है। दुर्गा-पूजा के समय मैं उन्हें कुछ कपड़े-लत्ते भी भेजता हूं। मां ने कह दिया है कि कुछ भी हो, आखिर वे हैं तो गुरुजन ही!"

"और तुम्हारी मां? मां कैसी है? कहां है?"

राजू ने कहा, "यहीं है, मेरे पास। उसके सिवाय और वह जाएगी भी कहां? मां ने जिन्दगी भर मेरे लिए बहुत-से कष्ट उठाए हैं। अब मैं जितना भी संभव हो पाता है, मां को सुखी करने की कोशिश करता हूं। मां ही तो मेरे लिए सब कुछ है। दरअसल तुम लोग तो कोई भगवान पर विश्वास करते नहीं थे। मैं जब भगवान की बात छेड़ता, तब तुम लोग मेरा मजाक उड़ाया करते थे। लेकिन मैं तो भाई अब भी भगवान पर विश्वास करता हूं। सच पूछो तो भगवान जरूर है। वही सब कुछ है। हम लोग तो झूठ-मूठ अपने मुंह मियां मिट्ठू बना करते हैं।"

उसके बाद कुछ रुककर राजू ने कहा, "आज शाम को हमारे घर पर आओ न।"

मैंने कहा, "मुझे आज ही चले जाना होगा। आज और समय निकाल नहीं पाऊंगा भाई। अगली बार आने पर मैं जरूर तुमसे मिलूंगा।"

उसके बाद राजू फिर अपनी गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी धूल उड़ाती हुई आंखों से ओझल हो गई। मैं खड़ा-खड़ा सोचने लगा, "सचमुच भगवान जरूर है। नहीं तो…।"